प्यारे राजनारायण

मेरा प्रेम पत्र पढ़ कर तुम नाराज न होना।

बात दरअसल में यह है कि मुझे वो जमाना भूलता नहीं जब चौधरी साहब ने तुम्हें हनुमान कहा था। तुमने भी हनुमान का रोल बखूबी अदा किया। हनुमान ने लंका में आग लगायी थी तुमने जनता पार्टी की लंका में आग लगा दी।

वैसे तुम्हारी लीला अपरम्पार है। तुमने तो रामायण ही बदल दी। हनुमान होकर राम को ही छोड़ गये। वैसे तुमने जितने रंग बदले हैं इतने तो गिरगिट ने भी नहीं बदले।

अब तो दल बदल के चेम्पयिन हो गये। तुम्हें ''नोबेल प्राइज'' मिलना ही चाहिए।

कभी दाढ़ी बढ़ाते हो, कभी कंटाते हो, कभी यज्ञ कराते हो। आज कल फिर दाढ़ी बढ़ा रखी है।

तुम्हारी दाढ़ी को देख कर मुझे यह शेर याद आ गया।

''किस परी रूह की ताक है साहिब
यह जो दाढ़ी बढ़ायी जाती है''

सुना है आजकल बहुगुणा साहब से नाता तोड़ कर फिर जनता पार्टी में शामिल हो गये हो। तुम्हारे लिए पार्टी बदलना तो ऐसे है जैसे पोशाक बदलना।

वैसे एक तुम और दूसरे जार्ज फर्नान्डीज दोनों को देश का गम खा रहा है। दुबले हुए जाते हो। मेरी मानो तो छोड़ो इस राजनीति का चक्कर, सन्तों का चोला धारण करो और दोनों राम नाम का जाप करो। मेरी नेक सलाह है कि अब इस देश पर रहम करो।

तुम्हारा चिल्ली

प्रेम पत्र

मुख पृष्ठ पर

आई बात समझ में भैय्या
चिल्ली तुमको बता रहा है
जैसे मिक्स जूस है बनता
वैसे दीवाना आ रहा है।
बारह मसाले, तेरह स्वाद
ऐसा मिक्चर तैयार किया है
पकने पर तुम रंग जाओगे
सब रंगों का निचोड़ दिया है।

दीवाना

अंक : ६ वर्ष : 19 १६-३१ मार्च 1983

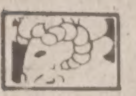
सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता

दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

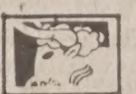
वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	२.०० रुपये

आपका भविष्य

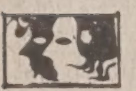
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



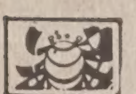
मेष : व्यय अधिक और धन की कमी महसूस होगी, बनते कामों में अड़चन, यात्रा छोड़ दें, मित्र सहयोग से थोड़ी बहुत सफलता नसीब होगी, आय यथार्थ, हालात सुधरेंगे, रुकावटें दूर होंगी।



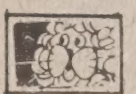
वृष : स्थायी कामधन्धों में सुधार, व्यर्थ की समस्यायें बनी रहेंगी, आय व्यय से अधिक, यात्रासफल होगी, कोई खास खबर मिलेगी, लाभ देर से मिलेगा, फिर भी परिश्रम द्वारा काम बन जायेंगे।



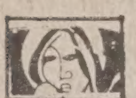
मिथुन : अशुभफलों में कामों और शुभ फलों में वृद्धि होगी, योजनाओं में सफलता, लाभ बढ़ेगा, यात्रा भी हो सकती है, आय-व्यय में समानता, स्थायी एवं नए कामधन्धों पर विचार बनेगा।



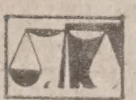
कर्क : स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, हालात कुछ सुधरेंगे, संघर्ष काफी करना पड़ेगा, व्यर्थ की बातों से परेशानी, काम बनते रहेंगे, लाभ खर्च बराबर, कुछ विशेष काम बनेंगे।



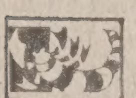
सिंह : समस्यायें काफी रहेंगी, संघर्ष करने पर भी सफलता पूरी न मिलेगी, यात्रा छोड़ दें, भाई सहयोग देंगे, कामकाज में सुधार होने लगेगा, रुका पैसा मिलेगा, यात्रा में सुख मिलेगा।



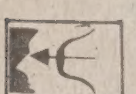
कन्या : हालात प्रायः ठीक चलेंगे, किसी विशेष उलझन के दूर होने से खुशी होगी, वातावरण भी सुधरेगा, घर-परिवार की समस्याओं से परेशानी, दौड़धूप काफी रहेगी, यात्रा न करें।



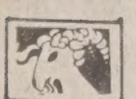
तुला : कामों में रुचि बढ़ेगी, भाग्य सहारा देगा, और सफलता भी समय पर मिलती रहेगी, भागदौड़ काफी करनी होगी, व्यय अधिक, नई योजना पर विचार, सुख साधनों में वृद्धि होगी।



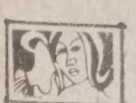
वृश्चिक : कार्यों में सफलता मिलती रहेगी, आर्थिक दशा सुधरेगी, यात्रा का विचार बनेगा, व्यय यथार्थ होगा, संघर्षमय हालात बने रहेंगे, अफसरों के संपर्क में जाना पड़ेगा, लाभ खर्च बराबर होगा।



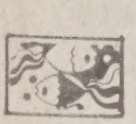
धनु : व्यर्थ की उलझनें परेशान करेंगी, दिल में घबराहट या बेचैनी, यात्रा न करें, लाभ देर से मिलेगा, कुछ बिगड़े काम बनेंगे, भाग्य साथ देगा, और परिश्रम करने पर सफलता मिलेगी।



मकर : कारोबार की दशा ठीक चलेगी, लाभ अच्छा होगा, घरेलू हालात से चिन्ता, नातेदारी से मेलजोल, सावधानी से रहें, कोई अप्रिय समाचार या घटना हो सकती है।



कुंभ : समस्यायें तो काफी रहेंगी, फिर भी सफलता मिलती रहेगी, व्यापार से लाभ बढ़ेगा, जरूरी काम समय पर बन जायेंगे, कारोबार अच्छा चलेगा, हालात में सुधार होगा।



मीन : लाभ अच्छा, व्यापारिक क्षेत्र में भी विकास होगा, यात्रा सफल, कोई खास खबर मिल सकती है, व्यर्थ के झगड़े झंझटों से परेशानी, सुस्ती छायी रहेगी, आय-व्यय यथार्थ होंगे।

आपके पत्र

दीवाना का अंक 4 प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ देखते ही हंसी फूट पड़ी। 'घरेलू नौकर' कहानी बहुत पसन्द आई। 'बन्द करो बकवास', 'लल्लू' और मदहोश' ने भी खूब हंसाया। लेकिन इस बार सबसे ज्यादा मोटू-पतलू ने प्रभावित किया। अगले अंक का बेसब्री से इंतजार है। **नवनीत तलवार—जयपुर**

दीवाना का हर एक अंक मैं बहुत चाव से पढ़ता हूं। इसकी पूरी सामग्री सराहनीय होती है। इतने कम मूल्य में भी बहुत कुछ पढ़ने को मिलता है। गरीबचंद की डाक यह उल्लेखनीय स्तंभ है। फिर भी कुछ सवाल घिसे पिटे होते हैं। कृपया ऐसे सवाल शामिल न करें। क्यों और कैसे पढ़कर ज्ञान की वृद्धि होती है। हरेक अंक का मुखपृष्ठ भी मनोरंजक होता है।

आपसे अनुरोध है पाठकों के भेजे हुए कार्टूनों के लिए एक स्थायी स्तंभ शुरू करें। आशा है आप जरूर ध्यान देंगे। **शैलेश कुमार भाटिया—जलगांव**

पाठकों से कई बार अनुरोध कर चुके हैं कि घिसे-पिटे और पुराने सवाल न भेजें। इस कारण किसी-किसी पाठक के कई-कई प्रश्नों का उत्तर हम नहीं दे पाते लेकिन जब कोई पाठक नाराज लगता है तो मजबूर होकर हमें उसका प्रश्न छापना पड़ता है। —सं०

'दीवाना' पढ़ता रहता हूं लेकिन पत्र पहली बार लिख रहा हूं। इसके लिए क्षमा चाहता हूं। आपकी पत्रिका के व्यंग इतने सटीक और तीखे होते हैं कि मैं उनकी प्रशंसा नहीं कर सकता। आपकी पत्रिका के अनूठे-अनूठे व्यंग पढ़कर मैं अनुमान लगाना मुश्किल समझ रहा हूं। कि वाकई में आप कितना दिमाग लगाते हो। आपकी पत्रिका के व्यंग पढ़कर हम लोग बहुत सी अनोखी बातों की जानकारी प्राप्त करते है। 'क्यों और कैसे' बहुत ही अच्छा स्तम्भ है। अपनी इस प्यारी पत्रिका को मैं सच्चे दिल से शुभकामनायें दे रहा हूं।

अजय कुमार शर्मा—बरेली

दीवाना का अंक 4 इस बार बहुत लेट मिला। परन्तु मुखपृष्ठ पर बिल्ली को देखकर प्रसन्नता हुई। मोटू-पतलू—'हेराफेरी नहीं' ने तो हंसा-हंसा कर दीवाना कर दिया। 'लल्लू' और 'सिलबिल-पिलपिल' हमेशा की तरह बहुत मनोरंजक लगा। परन्तु 'गरीबचन्द की डाक' में अपना प्रश्न न पाकर दुःख हुआ अन्य सभी स्थाई स्तम्भ तथा कहानियां भी रोचक लगीं। कृपया आप 'दीवाना कैमल प्रतियोगिता' नियमित दिया करें। 'लम्बी नाक के दीवाने प्रयोग' नामक रंगीन फीचर बहुत ही अच्छा लगा।

तजेन्द्र भाटिया—दिल्ली-9

आप नये व चटपटे प्रश्न पूछिए उत्तर अवश्य दिये जायेंगे। —सं०

दीवाना अंक 4 मिला। व्यंग रचना मास्टरी से उस्तादी, घरेलू नौकर, अच्छे लगे। दैनिक जीवन की गेंदबाजी और उन गेंदों को खेलने के दीवाने टैकनिक और खेल-खेल में दीवाने नियम ऐसे होने चाहियें बहुत ही बढ़िया लगे। सिलबिल-पिलपिल पढ़कर बहुत ही खुशी हुई क्योंकि उनकी तपस्या का असर शायद अभी से चालू हो गया चोथे दिन का खेल बारिश के कारण न होना इसका उदाहरण है इससे जाहिर होता है कि हमें शंकर भगवान् के दर्शन भी जरूर होंगे। अगले अंक में और उनकी तपस्या के अडिग रहने की आशा में।

शिवकुमार गुप्ता—झील

गरीबचन्द के शब्दों में सिलबिल ने तपस्या भंग कर डाली इसलिए भारत मैच हार गया। —सं०

बेहद इंतजार के बाद दीवाना का अंक प्राप्त हुआ। 'मोटू-पतलू हेराफेरी नहीं' पढ़कर मन बाग-बाग हो गया। 'क्यों और कैसे' द्वारा हमें नई जानकारी प्राप्त हुई। गरीब चन्द जी द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तर दिलचस्प थे। 'घरेलू नौकर' और 'मौसम कराची का' कहानियां अच्छी लगीं। लम्बी नाक के दीवाने प्रयोग पसन्द आए। सिलबिल पिलपिल की घोर तपस्या अच्छी लगी। ताएक्वोन्डो सीखने का अवसर प्राप्त हुआ, अगले अंक का इंतजार है।

सुखविन्द्र जौड़ा—कृष्णा पार्क

व्यंग—चेतावनी :—

सावधान ! खतरा है !

गोविन्द नारायण मिश्र

'सावधान ! खतरा है'—सड़कों पर खतरे की सूचना और सड़क निर्माण या मरम्मत होने की रुकावटें आज आम बातें हैं। कई मकानों के बाहर 'सावधान कुत्ता है' या इससे मिलती-जुलती खतरे की सूचनायें सभ्य समाज की देन हैं। गोकि इंसान को पालतू कुत्तों से ज्यादा खतरा सड़कों पर आवारा घूमते कुत्तों से रहता है। शायद इसी लिए रहीम ने लिखा था।

'रहिमन डण्डा राखिये, सदा हाथ में संग।'

पर आज के युग में डंण्डा, लाठी लेकर चलना गंवारूपन या ठेठ देहातीपन माना जाता है, इसी कारण शहरों में आकर देहाती और गंवार भी लाठी डण्डा ताक पर धर देते हैं। यूं कालेज में पढ़ने वाले छोकरे और शोहदे हाथ में हाकी झुलाते हुए देखे जा सकते हैं, जो हर कहीं हाकी का मैदान समझकर 'बाल' की जगह दूसरे इन्सानों के 'सिरफोड़' सकते हैं।

शरीफ आदमी यदि दौलत मन्द हुआ तो पिस्तौल या रिवाल्वर लटका कर चलता है। ठसकेदार देहाती हुआ तो बन्दूक को कन्धे पर ऐसे टांग कर चलता है जैसे बैंड बजाने वाला गले में बैंड। आम शिक्षित आदमी 'कलम' को ही हथियार मानकर सदा साथ रखता है। लेकिन आज वह भी खतरे से खाली नहीं है।

बिहार के पत्रकार, रिपोर्टर या सम्पादक अपनी कलम के हथियार के कारण भयानक खतरे के शिकार हो रहे हैं। खतरा उनके पीछे ऐसे ही दौड़ रहा है। जैसे बिल्ली के पीछे कुत्ता। पुलिस उन्हें उसी प्रकार ढूंढ़ निकालनी है। जैसे गुड़ को चींटी और चींटे। कहीं भी आते-जाते, किसी भी समय यदि पुलिस वाले रास्ता रोककर नाम पता पूछने लगें तो आपका घबराना स्वाभाविक होगा। यदि आप पत्रकार, रिपोर्टर या संपादक हैं, तो फिर 'शातिर बदमाश' कहलाते देर न लगेगी। उनका घूमना और कलम लेकर चलना उतना ही बड़ा अपराध है, जितना खुले आम 'आवारागर्दी' करना और 'चाकू-छुरा' रखना। जेल के फाटक उनके लिए वैसे ही खुल जाते हैं, जैसे दामाद के लिए ससुराल के दरवाजे।

हमारे देश की सरकारों को भी विरोधी पार्टियों, विपक्षियों और पत्रकारों से वैसा ही खतरा हरदम रहता है, जैसे शिकार को शिकारी की झलक पाकर उसकी बन्दूक से। वहीं दूसरी ओर विरोधियों को सरकार से वैसा ही खतरा रहता है, जैसे मेढ़की को जुकाम से। खतरों से हरदम जूझने वाले दुर्दान्त डाकू भी बड़े खतरे को वैसे ही सूंघ लेते हैं जैसे कुत्ता शिकार को। फिर या तो 'मलखान' जैसे 'आत्मसमर्पण' करने में अपना भला सोचते हैं या कि 'फूलन देवी' जैसे हजारों पुलिस वालों को झांसा देने में सफल हो जाते हैं। 'पुलिस वालों' की जब नौकरी पर बन आती है, तो 'एन-काउन्टर' की भरमार हो जाती है, मरने वाला चाहे जो हो, मरकर नामी डकैत बन जाता है। गरचे कि पुलिस का खतरा हर आम व खास आदमी को

शेष पृष्ठ १२ पर—



व्यंग-कवियों के संग

जगन्नाथ विश्व

श्री गोपाल प्रसाद व्यास

धन्य गुरु गोपाल जी दिल्ली के मशहूर,
उठा पटक में हो गए लाल किले से दूर ।।
बाग से निकला माली,
साथ दे कब तक साली ।।

श्री काका हाथरसी

हाथरस से हास्य का भारत भर में रंग,
धूम मचाते रंग जमाते काका जी के व्यंग ।
ठहाके पर ठहाका,
धन्य काकी के काका ।

श्री निर्भय हाथरसी

दो अंगुल की आड़ ले सन्यासी शैतान,
निर्भय से निर्भयानंद बन बैठे भगवान ।
चाहे भजन कराले
भगवन इसे उठाले

श्री गोपालदास नीरज

'कारवां तो गुजर गया देखत खड़े गुबार',
धन्य छुपे रुस्तम बन्धु शर्मीली के यार ।
पूरे दस नम्बरी
डूबे सुरा सुन्दरी

श्री गोविंद व्यास

बिना बात गोविंद जी छू लेते आकाश,
काव्य मंच पर ठानते सबका सत्यानाश ।
स्वर विद्रोही जागे
बाप से बेटा आगे ।

श्री सुरेन्द्र शर्मा

शर्मा जी का हो गया कविता से कल्याण,
दवा छोड़ने से मिली मुक्ति है भगवान ।
दवा जैसी नकली है,
काव्य भी क्या असली है ।

श्री ओमप्रकाश आदित्य

गोरी बैठी छत्त पर कूदन को तैयार,
पटा रहे आदित्य जी चल झील के पार ।
दुल्हनियां जीले थोड़ी,
बैठ दूल्हे की घोड़ी ।

श्री शैल चतुर्वेदी

नगर गांव में चल गई भप्पू खूब हंसाय
मैया हीरो हो गए भाभी फिलम बनाय ।
माया का कमाल है
काया गोल माल है

श्री माणिक वर्मा

हास्य व्यंग के जादूगर हरदा के अनमोल,
कविता माणिक पी गए सब दारू में घोल
थाम बिजली का खम्बा
बचाले मां जगदम्बा ।



मसखरे, कभी-कभी मेरा दिल तडफ उठता है । काश मैं भी एक साधारण व्यक्ति होता'''बाजार में घूमता'''टी स्टाल पर बैठकर चाय पीता''ढाबे में खाना खाता''''''
अपने आपको फन्ने खां समझता है ।
लड़कियों का पीछा करता और लोग मुंह काला कर, गधे पर बिठा कर शहर में घुमाते ।
पिक्चरें देखता, क्रिकेट कमेंट्री सुनता'''सड़क पर खड़े होकर मूंगफली खाता'''पार्क में जाकर बैंच पर सोता'''
महाराज मैं आपको एक तरकीब बताता हूं । इस बार होली को आप साधारण व्यक्ति के मजे लूट सकते हैं । होली वाले रोज सुबह ही भेस बदल कर साधारण व्यक्ति बनकर महल के चोर दरवाजे से निकल जाइये और भीड़ में शामिल हो जाइये । मैं अफवाह फैला दूंगा कि राजा को जुकाम हो गया है और वह दिन भर अपने शयन कक्ष में ही रहेंगे, किसी से नहीं मिलेंगे । बस किसी को पता भी नहीं लगेगा ।
क्या ऐसा हो सकता है ?
हो क्यों नहीं सकता महाराज ? तरकीब बता तो दी है मैंने ।
महाराज बस चुपचाप निकल जाइये—मैं किसी को कानों-कान खबर भी नहीं होने दूंगा । होली की भीड़ में शामिल होकर भूल जाइये कि आप राजा हैं । खूब गला फाड़कर चिल्लाइये । रंग फेंकिये, कीचड उछालिये''गोविन्द आला रे गाइये—नमकीन लौंडियों पर पिचकारी मारिये —आज का दिन अपने दिल की भडास निकालिए'''जाइये ।
मसखरे तुम महल का हाल संभाले रखना किसी को कानों-कान खबर न होने पाये । मैं सीधे बरसाने जाऊंगा, कहते हैं वहां की गोरियां खूब जोरदार होली खेलती हैं । यह गुप्त सुरंग नदी किनारे जाकर खुलता है वहां से बरसाने कुल चार कोस है—शाम को लौटूंगा ।
आ गये महाराज !
मसखरे, बड़ा मजा आया बरसाने की होली खेलने का । हमने गोरियों पर खूब रंग फेंका उन्होंने भी जम कर डंडे बरसाये । लेकिन उन डंडों को खाने का भी अपना मजा है ।
यह खबर कैसी छपी है''''होली के दिन राजा ने गोरियों के डंडे खाये'''
मसखरे, तुम्हारे सिवा किसी को मालूम नहीं था होली को क्या हुआ'''अखबार में यह खबर कैसी छपी है ?
महाराज, कल सुबह संवाददाता ने पूछा था कि आपने नाश्ते में क्या खाया'' मैंने बता दिया आपने व्हाइट लैग हॉर्न मुर्गी के अंडे खाये हैं । छापे की गलती से अंडे की जगह डंडे छप गया होगा ।
गलती से छप गया'''

निःशुल्क प्रवेश

दीवाना कॅमल
रंग प्रतियोगिता

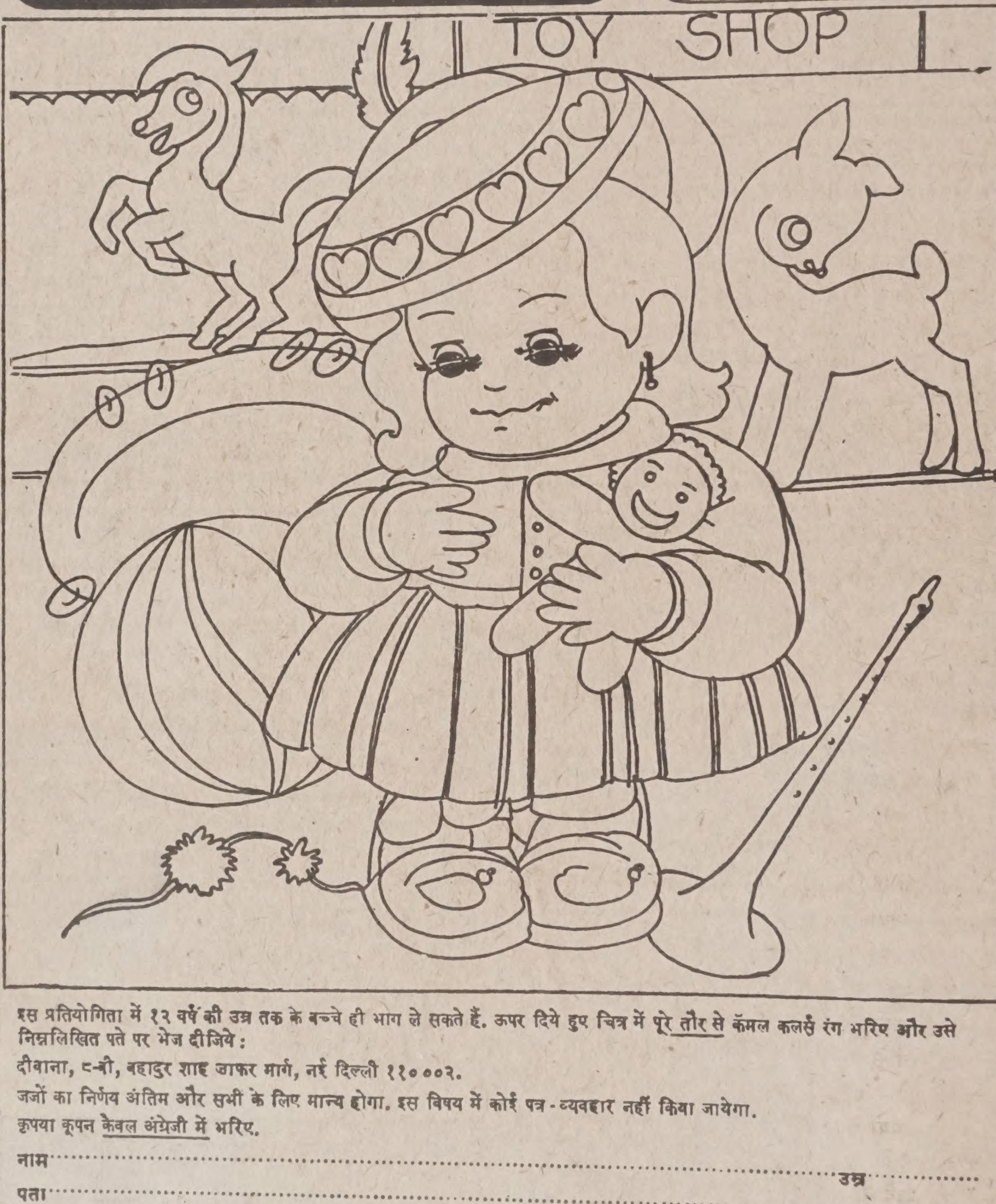
पुरस्कार जीतिए

कॅमल

पहला इनाम (१) रु. ३०/-
दूसरा इनाम (३) रु. २०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. १०/-
१० प्रमाणपत्र

दीवाना

५ आश्वासन इनाम



इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जाफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

नाम...उम्र..................

पता..

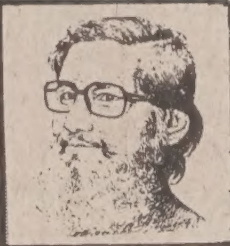
....

प्रवेशिकाएं 15-4-83 से पहले भेजी जायें.

CONTEST NO.29

काका के कारतूस

अटपटे प्रश्न दीवानों के
चटपटे उत्तर काका हाथरसी के



रमेश बहादुर सक्सेना—ग्वालियर

प्र० : फूलन के आत्म-समर्पण पर आप क्या कहते हैं ?

उ० : 'काका' कविता लिखकर जीवन व्यर्थ गंवाया,
होकर के बदनाम, नाम फूलन ने पाया।
सत्ता में होते हम तो यह निर्णय लेते,
चरण चूम कर उसे 'पद्म भषण' दे देते।

अनिल कुमार 'अनल'—मीरगंज (गोपालगंज)

प्र० : मौत इंसान को ढूंढ़ती है या इंसान मौत को ?

उ० : जब दोनों के मिलन का बन जाता है प्लान,
शादी करके मौत से, खत्म होय इन्सान।

नवरतन प्रसाद वर्मा 'दोस्त'—गोला बाजार

प्र० : कोई-कोई लड़की बालों को फूलों से क्यों सजाती है?

उ० : भंवरे भन्नाते रहें, आयें मेरे पास,
जो मेरे दिल को छुए, डालूं उसको घास।

बद्रीप्रसाद वर्मा—गोला बाजार

प्र० : काकाजी, आप हमारे प्रश्नों की चोरी क्यों करते हैं ?

उ० : हम तुम दोनों एक से, मचा रहे क्यों शोर,
प्रश्न चोर हम बन गए, तुम हो उत्तर चोर।

अली असगर महूवाला—रतलाम

प्र० : आप किसी सम्मेलन में काकी को ले जाते हैं तब वहां क्या होता है ?

उ० : सम्मेलन में होय जब हम दोनों का योग,
हमें लुगाई देखतीं, उनको देखें लोग।

केवल प्रकाश—रेलवे स्टेशन, काशीपुर

प्र० : बस एक्सीडेंट में मरने पर 10 हजार, रेल में 50 हजार, हवाई जहाज में 1 या डेढ़ लाख मिलते हैं, आप किस में मरना चाहेंगे ?

उ० : मारें हमें विमान में, कृपा करें रघुनाथ,
सौ-पचास, वी. आई. पी., मरें हमारे साथ।

सोमनाथ 'नन्दवानी'—फरीदाबाद

प्र० : लड़कियां काला ब्लाउज तो चाहती हैं, काला पति क्यों नहीं चाहतीं ?

उ० : काले कान्हा ने किया, बेढंगा गठजोड़,
कुबिजा से जाकर सटे, गोरी राधा छोड़।

रविकान्त दुबे—पचपेढ़ी, जबलपुर

प्र० : ज्योतिषियों से जनता का विश्वास क्यों हटता जा रहा है ?

उ० : जो कहदें वह नहीं हो, नहीं कहें वह होय,
इसीलिए विश्वास अब उनका करे न कोय।

मुसल आस्मी और जाबीर रज्जानी—बानरहाट

प्र० : जवानी और बुढ़ापे के इश्क में क्या फर्क है ?

उ० : दोनों के मजे लेकर तफसील हमने दी है,
वह प्यार सैक्स का था, यह इश्क हकीकी है।

मनोज कुमार सिंघई—नागपुर

प्र० : नजर से नजर मिलने पर ही इश्क हो जाता है तो दिल मिलने पर ?

उ० : नजर मिली, पैदा हुआ डरते-डरते इश्क,
दिल से दिल जब मिल गया, दूर हो गई रिस्क।

बिनोद कुमार लोन्धे—धमतरी (रायपुर)

प्र० : जिन्दगी में प्यार एक बार होता है या कई बार ?

उ० : एक जगह जम जाय जो, ऐसा लव बेकार,
रोज चेन्ज करते रहो, 'मूवेबिल' है प्यार।

सिद्धार्थ तापड़िया—अमरोहा

प्र० : दोस्ती और प्यार में क्या अन्तर है काका ?

उ० : बिन चीनी की चाय या बिना बटर के टोस्ट,
वैसे ही फीके लगें, बिना प्यार के दोस्त।

रमेशचन्द्र वर्मा—कोट, अमरोहा

प्र० : भगवान की पूजा और लड़की की पूजा करने पर क्या-क्या प्राप्त होता है ?

उ० : प्रभु पूजन से प्रगति हो, भाग्य भोग दे साथ,
लडकी-लडकी रटो तो कड़की आए हाथ।



राम लखन चौधरी—मेरठ

प्र० : कांग्रेस आई की हालत पतली क्यों होती जा रही है ?

उ० : आंधी आन्ध्र प्रदेश की, मार गई है चोट,
इल्मी से फिल्मी बड़ा, 'आई' का क्या खोट।

जयप्रकाश बंसल—कैथल (हरियाणा)

प्र० : वह हुस्न भी क्या हुस्न है, जो गाल पर लाली न हो,
ससुराल वह ससुराल क्या, जिसमें कोई साली न हो।

उ० : वह बाग भी क्या बाग है, जिसमें कोई माली न हो,
उल्लू है वह प्रेमी, जिसने प्रेमिका पाली न हो।

सुधा उपाध्याय—जबलपुर (म. प्र.)

प्र० : झूठ को छिपाने के लिए, झूठ का प्रयोग क्यों करना पड़ता है ?

उ० : रिश्वत पकड़ी जाय तो रिश्वत देकर छूट,
लोहे से लोहा कटे, कटे झूठ से झूठ।

काका के कारतूस
दीवाना, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पृष्ठ ७ से आगे

रहता है, न रहे तो देश में अमन व चैन को खतरा पैदा हो जाता है।

नेताओं और राजनीतिज्ञों को भी अपनी 'कुर्सी का खतरा हरदम बना रहता है। बाहर तो बाहर, घर में भी राजनीति खतरे का कारण बन जाती है। पति को पत्नी से, सास को बहू से, बहू को सास से, देवर को भाभी से राजनीतिक खतरे पैदा हो जाना आज साधारण बातें हैं। दहेज लोभी ससुराल वालों और पतियों से तो नवविवाहिता पत्नियों को जान का खतरा उसी प्रकार बढ़ता जा रहा है, जैसे बरसात में मेढ़क। बकौल गालिब—

'आग लग गई है घर को, घर के चिराग से'

यात्रा करना आज इन्सान के लिए मजबूरी है, और यात्रा में खतरों से दो चार होना, अगर जरूरी नहीं गैर मुमकिन भी नहीं है। घर से बाहर कदम रखते खतरे वैसे ही गले पड़ जाते हैं जैसे बकौल गालिब—

'घर से निकला था खुशियों की तलाश में, गम राह में खड़े थे, वहीं साथ हो लिए।'

यात्रा चाहे पैदल हो, चाहे बस, रेल या वायुयान द्वारा, दुर्घटना का खतरा हर समय बना रहता है। दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या वैसी ही हरसाल बढ़ती जाती है। जैसी वाहनों की संख्या 'आत्महत्या' का विचार करने वाले इन्सान अब 'रेल' से कटकर मरने की अपेक्षा, रेल में सफर करना-ज्यादा अच्छा समझते हैं। हर रेलवे क्रासिंग पर खतरा है, न जाने कौन सी क्रासिंग का फाटक खुला हो, या फाटक ही न हो, या कि रेल कर्मचारी एक ही लाईन पर दो-दो गाड़ियां लेने लगें? रेल दुर्घटना में मरना, एक निहायत घिनौनी चीज है। मुझे तो अगर दुर्घटना में मरना ही होगा तो चाहूंगा कि 'हवाई दुर्घटना में मरूं ताकि नाम भी हो और परिवार वालों को 'नामा' भी मिले।

दुर्घटना में घायल होकर अस्पताल में भी भर्ती होना और वह भी सरकारी अस्पताल में, तो मौत का गले लगना कुछ देर के लिए भले ही टल जाये, बचना जरा मुश्किल है। न जाने किस अस्पताल की ग्लूकोज की बोतलों में फफूंदी लगी हो या कि दवा ही नकली हो, क्योंकि भारत में नकली दवाईयों की वैसे ही भरमार है जैसे मिठाई की दुकानों में मक्खियों की। हमारे नेता और सरकार, सब जानते हैं मगर मजबूर हैं। बड़े-बड़े नेता और अमीर इस लिए अपना इलाज विदेशों में कराते हैं। जुकाम भी हुआ तो इलाज अमरीका या अन्य देश में कराना, उनके लिए सहज है। आम नागरिक तो नीम हकीमों से लेकर सरकारी अस्पतालों में यमराज के सहोदरों तक की शरण गहता है, मौत का खतरा टले या न टले।

आज इन्सान को 'महायुद्ध' का खतरा कम, हवा तथा पानी से ज्यादा होता जा रहा है। प्रदूषण तथा शोर-धमाके का खतरा झेलना आधुनिक और सम्पन्न बनने के लिए उसी प्रकार जरूरी हो गया है, जैसे रात में सोते समय मच्छरों का 'डिस्को संगीत' सुनना।

बुजुर्गों ने कहा-'खतरों से खेलना ही जिन्दगी है।' मगर इतने सारे खतरों के होने के बावजूद, इन्सान 'आगाह' कर दिए जाने पर भी खतरों को मोल लेने

शेष पृष्ठ ५० पर

ग्राहक बनिये



अब

प्रतिमाह भारत के प्रमुख कामिक्स ग्रुप की ओर से प्रकाशित

कामिक्स



सालाना दर 48 रु.

सालाना दर निम्नलिखित पते पर भेजिये
किरन पब्लिकेशन्स
59 नेशनल पार्क नई दिल्ली-110024

मैंने निम्नलिखित राशि रु.............चैक या मनीआर्डर द्वारा भेज दी है।

नाम ....

पता ....

.... दिन ....

आप

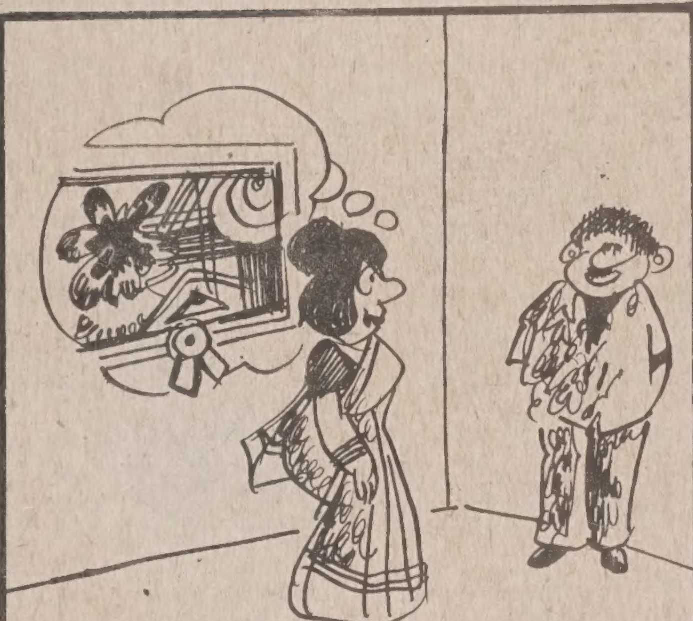
भी उपरोक्त पत्रिका में ग्राहक बनकर घर बैठे 12 प्रतियां प्राप्त कर सकते हैं।

होली क्यों खेलें?

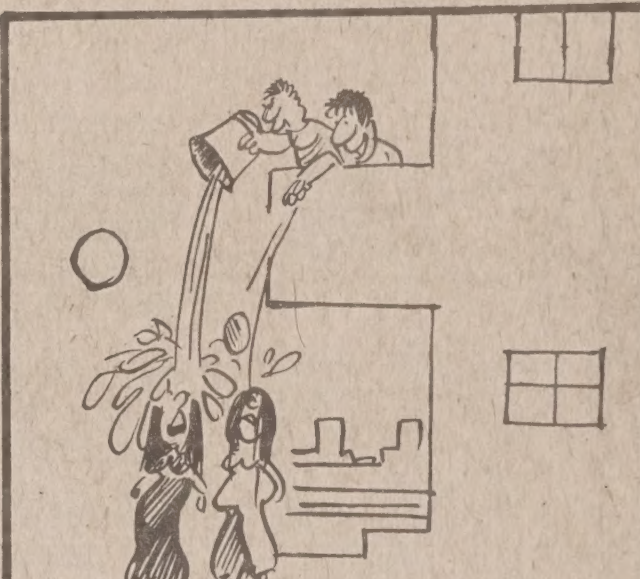
होली खेलना एक सामाजिक आवश्यकता है। इसके कई लाभ हैं—



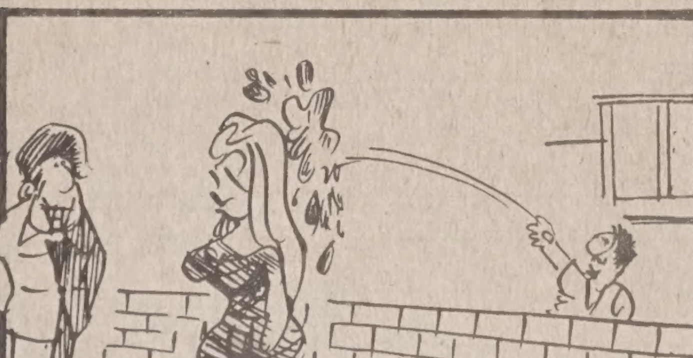
होली पर खराब हुये कपड़े नौकरों या दूसरे घरेलू कर्मचारियों को मिलते हैं।



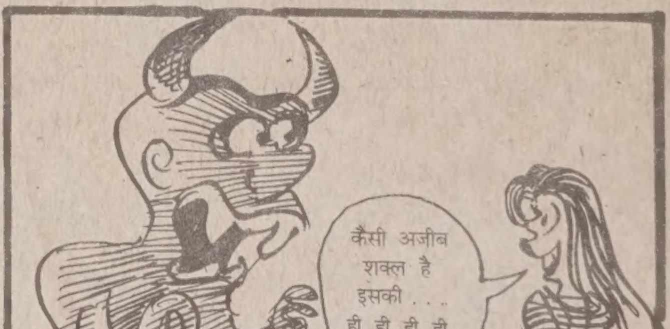
होली के रंगों को देख मार्डर्न आर्ट में रुचि बढ़ती है। मार्डर्न आर्ट में रुचि होना आधुनिकता है।



वर्ष में पहली बार ग्राउंड फ्लोर न मिलने का गम नहीं सालता। ऊपर की मंजिलों से गुब्बारे या रंग फैंकने में बड़ी आसानी रहती है साथ ही सुरक्षा भी।



होली के अवसर पर गुब्बारों का पानी लड़कियों के कपड़ों को भिगो देता है। गीले कपड़े शरीर से चिपक जाते हैं और आप को पता लगता है कि शरीर की असली रूप रेखा क्या है।



होली के रंग पुते भुतहा चेहरे हमें निडर बनाते हैं। होली के काफी दिन बाद तक भूत प्रेत भी नजर आये तो डर नहीं लगेगा।



रंग पुते चेहरों को पहचानना आसान नहीं होता — चेहरों को देख पहचानने में वर्ग पहेली हल करने का सा आनन्द आता है।



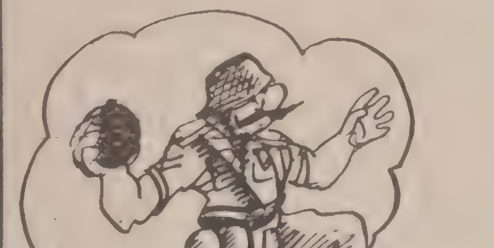
जिस लड़की को देख आपकी सीटी बजाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी, उसी को आप होली की मेहरबानी से धड़ल्ले से शरेआम गुब्बारे मार सकते हैं।



होली के अवसर पर सब चेहरे रंग बिरंगे नजर आते हैं—सब एक जैसे लगते हैं. इससे समाजवाद की भावना को बल मिलता है।



होली पर पहली बार आप कपड़े गन्दे फन्दे करके जाते हैं और मन में तनिक भी डर नहीं होता कि मम्मी डांटेंगी। यह एक बहुत सुखदायी अनुभव है।



गुब्बारे फैंकने से थ्रोइंग की प्रैक्टिस होती है जिससे बाद में फास्ट बॉलर या फ़ौज में ग्रेनेडियर बनने में सुभीता रहेगी।



गुब्बारों के ठण्डे पानी से लड़कियों को जुकाम हो सकता है। जुकाम फैलेगा और छींकों के कारण मुहल्ले में रौनक बढ़ जायेगी। लड़कियों के चेहरों पर और लाली आयेगी।

क्यों और कैसे

प्र० : क्या भोजन देखने भर से मोटे हो सकते हैं ?

उ० : लगभग हर एक व्यक्ति ने किसी भारी व्यक्ति को कहते अवश्य सुना होगा 'मैं तो भोजन को देखने से भी मोटा हो जाता हूं ।'

अब ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्राचीन कथन में कोई न कोई सत्य अवश्य है । केवल भोजन को देखने, या उसकी सुगन्ध लेने या सिर्फ उसको पकते हुए सुनने भर से तुम्हारी कमर का घेरा फैल सकता है विशेषकर यदि आप पहले से ही ज्यादा वजन के हैं तो ।

साइकोलोजिस्ट जूडिथ रोडिन और उनके साथी जो येल विश्वविद्यालय में थे ने अपनी खोज से पता लगाया है कि जिन लोगों पर भोजन की सुगन्ध इत्यादि का अधिक प्रभाव होता है 'जैसे कि स्टेर्न' के बर्तन में पकने का शब्द सुनने भर से उनके शरीर में अधिक मात्रा में इन्सूलिन उत्पन्न होती है और कहीं भोजन मन-पसन्द हुआ तो फिर तो कहना ही क्या ? तत्वों की उत्पत्ति और भी अधिक होगी। और गुणों के अतिरिक्त हारमोन इन्सूलिन शरीर के भीतर की शूगर या चीनी को चर्बी में अधिक तेजी से बदलती है ।

यह क्रिया मोटे लोगों में अधिक दिखाई देती है क्योंकि उनके रक्त में साधारण व्यक्तियों से पहले ही अधिक इन्सूलिन होती है। उनके शरीर की अवस्था जिसे हाईपर इन्सोल मिनिया कहते हैं उनके शरीर के मेटाबोलिक सिस्टम से चर्बी बना कर जमा करने का काम अधिक से अधिक कराती है । साथ साथ क्योंकि वे खाते अधिक हैं ज्यादा शूगर चर्बी बनाने के लिए शरीर में मौजूद होती है ।

रोडिन और उनके साथी ने कई बार पता लगाने के लिए उन व्यक्तियों के टेस्ट किए जिन्होंने अट्ठारह-अट्ठारह घंटे से कुछ भी नहीं खाया होता । जिस समय खोज कर्ता भूखे व्यक्तियों के शरीर से रक्त के नमूने ले रहे थे आधा पका हुआ लजीज गोश्त पकने के लिए उनके सामने लाकर रख दिया गया और जैसे वे लोग गोश्त को पकते देखते रहे, और उसके भुनने की सुगन्ध तथा पकने की आवाज सुनते रहे, वैज्ञानिकों ने उन्हें बताया कि लजीज गोश्त कुछ ही मिनटों में उन्हें खाने के लिए मिलेगा ।

उनके शरीर के भीतर की इन्सूलिन की मात्रा एक दम से बढ़ गई ।

अब कहिए । क्या भोजन देखने भर से मोटापा बढ़ेगा या नहीं ।

प्र० : उपग्रह इत्यादि पदार्थ अन्तरिक्ष की कक्षा में कैसे ठहरते हैं ?

उ० : इस समय लगभग 4,500 मानव निर्मित पदार्थ या उपग्रह इत्यादि अन्तरिक्ष में पृथ्वी के चारों ओर घूम रहे हैं । उनके अन्तरिक्ष की इस कक्षा या ओरबिट में रहने के लिए दो विपरीत शक्तियों की आवश्यकता होती है ।

इनको इनकी कक्षा में बनाये रखने के लिए दो विपरीत शक्तियों को एक दूसरे के साथ पूरी तरह बैलेंस करना पड़ता है ।



एक है गुरुत्व आकर्षण की खींचने की शक्ति जो हर वस्तु को निरन्तर नीचे को खींचती रहती है । दूसरी है इनरशिया की शक्ति—किसी भी वस्तु के निरन्तर एक सीधी लाइन में आगे बढ़ते रहने की प्रवृति, जब तक कि वस्तु को किसी शक्ति द्वारा अपने पथ से हटाया न जाये ।

पृथ्वी पर रहने वाले हम जीवों के लिए गुरुत्व आकर्षण एक बहुत ही अधिक शक्तिशाली ताकत है । केवल अन्तरिक्ष यात्रियों के पास ही ऐसे साधन हैं जिनसे वे इतनी गति से चल सकते हैं कि उनकी इनरशिया की शक्ति गुरुत्व आकर्षण की शक्ति की बराबरी कर लें । ऊंची छलांग लगाने वाले, बांसों से उछलने वाले तथा निडर मोटर साईकिल चलाने वालेसभी को जल्दी ही धरती पर वापिस आ जाना पड़ता है ।

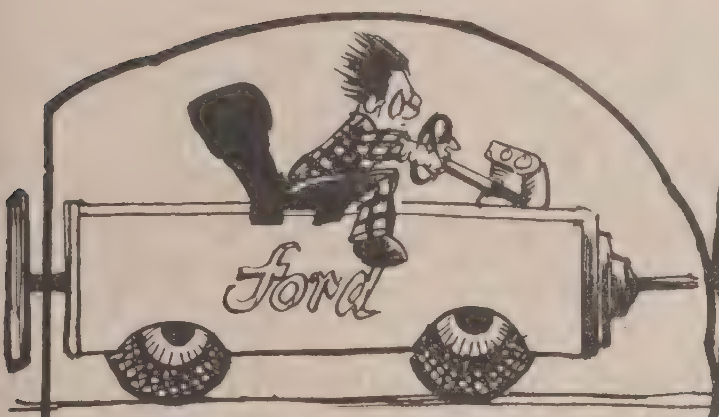
परन्तु पांच मील प्रति सैकिन्ड की गति पर पहुंच राकेट, संचार उपग्रह तथा अन्तरिक्ष यात्री 'वापिस आने की सीमा' पर पहुंच जाते हैं । जैसे ही अन्त-रिक्ष यान की गति उसे सीधी पृथ्वी से दूर गतिमय रखने का प्रयास करती है गुरुत्वाकर्षण उसे वापिस आने के लिए खींचता रहता है परन्तु इस समय इन-रशिया इतना शक्तिशाली हो जाता है कि गुरुत्वाकर्षण उस पर विजय नहीं पा सकता, इस कारण दोनों एक दूसरे पर जोर लगाते रहते हैं परिणामस्वरूप पृथ्वी के चारों ओर उपग्रह की कक्षा बन जाती है ।

बिना एक और धक्के के, जैसे की राकेट फायर करने से धक्का लगता है अन्तरिक्ष यान पृथ्वी से और दूर नहीं जा पाता, साथ-साथ पृथ्वी का आकर्षण उसे अपने करीब भी नहीं खींच पाता, फल-स्वरूप वह एक कक्षा में पहुंच जाता है, अर्थात दोनों शक्तियां उसे निरन्तर पृथ्वी के चारों ओर घुमाती हैं। अधिकतर गति पृथ्वी के साथ क्षैतिज या हौरी-जोन्टल होती है । उदाहरण के लिए 200 मील की ऊंचाई पर ग्रैविटी के कारण नीचे की ओर आने की रफ्तार दस मील आगे बढ़ने पर केवल 63 होती है । पर जैसे-जैसे उपग्रह नीचे की ओर आता है पृथ्वी की तरह गोल होने के कारण उससे दूर की ओर घूमती जाती है। जिससे उपग्रह की कक्षा या ओरबिट बना रहता है। अधिक ऊंचे उपग्रह ग्रेविटी से कम प्रभावित होने के कारण धीमी गति से नीचे गिरते हैं इसी कारण उन्हें ओरबिट में आने में अधिक समय लगता है ।

उपग्रह हमेशा पृथ्वी का चक्कर लगाते रहेंगे जब तक कि किसी कारण उनकी गति में अन्तर न आये उदाहरण के लिए केवल 100 मील के आलटीट्यूड पर ऊपरी वातावरण में उन्हें रगड़ या फ्रिक्शन का सामना करना पड़ता इस कारण इस ऊंचाई के ओरबिट कुछ ही सप्ताह कार्यान्वित रह पाते हैं ।

यदि होली विदेशों में खेली जाती

तो उसका स्वरूप क्या होता ?
कुछ अटकलें

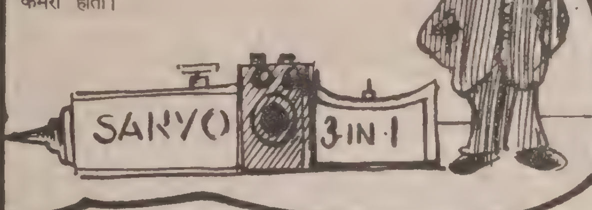


अमरीका
अमरीकी बगैर कार के ऐसा ही है जैसे बिना टांगों का घोड़ा—होली के लिये उन्होंने पिचकारी भी ड्राइव अवे- माडल बनाना था।



रूस
केवल लाल रंग से होली खेलने की आज्ञा होती—दूसरा रंग प्रयोग करने वालों को साइबेरिया भेज दिया जाता।

जापान
जापान में होली होती तो उन्होंने अब तक टू-इन-वन या थ्री-इन-वन निकाला होता—एक ओर पिचकारी दूसरी ओर दीवाली पर जलाने के लिये दिया—होली-दीवाली का टूइनवन उपकरण। थ्री-इन-वन में बीच में कैमरा होता।





अरब देश
रंग फैंकने के लिये भी वे पेट्रोल पम्प मॉडल का रंग पम्प बना कर होली खेलते।



दक्षिण अमरीकी देश
फुटबाल के दीवाने दक्षिण अमरीकी देश होली में भी फुटबाल का पुट भर देते। गुब्बारे ऐसे बनाते जो न फटें ताकि फैंके गये गुब्बारों को लोग हैड कर सकें।



जर्मनी
जर्मनी में खेले जाने वाले हर गुब्बारे को पहले अमरीका और रूस बीच में धागा बाध दो भागों में बांट देते—पूर्वी गुब्बारा और पश्चिमी गुब्बारा।

व्यंग रचना

स्टण्डर्ड सवा सौ से

—शिव रैना

घटते रिश्तों और बढ़ती जिम्मेदारियों के इस स्टैन्डर्ड-वृद्धि नाजुक दौर में, हमारी 'टें' बोलने लगी। अदालत के बाहर अर्जीनवीसी की; ट्यूशनें पढ़ाई; पापड़ की दुकान पर पार्ट-टाईम कार्य किया; सौदे-सुलुफ के लिफाफे तक बनाकर बेचे—मगर 'बच्चों की वर्षा' के कारण, सारी कमाई काफूर बनकर उड़ने लगी। कपड़ों, किराए, भोजन और फीस के हवनकुण्ड में, आय की आहुतियां पड़ने लगीं। हमारे उपजाऊ दिमाग में क्रांतिकारी विचार उठने लगे। उधर पड़ोसी-घरों में ट्रांजिस्टर, पंखे, साईकिल की जगह टेलीविजन-सेट, 'कूलर' और स्कूटर सजने लगे। तो हमारे सीने पर सांप लोटने लगे। सोच के समुंदर में ज्वारभाटे उठने लगे। हीनता के इंजेक्शन हमें दुबला करने लगे।

'पांच पांडवों, और सात कन्याओं के कान-फाड़ बाप होने के कारण, पड़ोसियों का सीधा सामना करना, हमारे वश का रोग न था। कतर-ब्योंत करके या कौड़ी-कौड़ी दांत से पकड़ कर भी, हम छापा मार 'गुरिल्ला—युद्ध' करने ही के काबिल थे।

जिन दिनों बगल के मुहल्ले में, एक 'सुखी व संक्षिप्त' परिवार में हमें सवा सौ रुपये की एक स्थाई ट्यूशन मिली उन्हीं दिनों अचानक, हमें रोशनी की किरण दिखाई दी। हुआ यह, कि हम अपनी जनसंख्या-- प्रेमी, उपजाऊ पत्नी के साथ, एक संबंधी के अंतिम—संस्कार से लौटे, गली में हमने एक माडर्न जोड़ी देखी। अभिनेता धर्मेंद्र ब्रांड पति ने जीन-जैकेट में जकड़े अंग्रेज-बच्चे को उंगली से लगा रखा था। गुलाब की महकती झाड़ी-से, अधनंगे बदन को हाई-हील सैंडिल पर उठाए, पत्नी ने पति की 'हेलमेट' (लोहे की टोपी) ताजा राष्ट्र-पति-पुरस्कार की तरह उठा रखी थी। हमारे परेशान दिमाग में एक बिजली-सी कौंधी! हमने गुलजार गली में, अपनी गोलमटोल बीवी का भद्दा हाथ दबाकर कहा: 'पा लिया! हमने स्टैण्डर्ड बढ़ाने का राज पा लिया!', हम मुंडी भेड़ की भांति नाचने लगे।

हमारी 'दर्जनी-बीवी'; स्टैण्डर्ड की कमी के कारण, हम से भी ज्यादा सिर धुनती रहती थीं। हमारी बात का भावार्थ उन्होंने तुरन्त 'कैच' कर लिया। हमारी आंखों में आंखें डालकर वो विशुद्ध हनीमूनी—हंसी सहित बोलीं, 'मैंने कहा,



स्टैण्डर्ड बढ़ने से, हमारा घर तेरहवीं किलकारी' से तो नहीं निहाल होगा ना? उनके चेहरे पर चुनौती का आकर्षण था।

हमने आंखें तरेर कर कहा, 'हरगिज नहीं! क्योंकि स्टैण्डर्ड बढ़ने से, केवल हमारी आत्मा को ही शांति मिलेगी—देह को नहीं! देह की शांति ही आरामपरस्ती के रूप में, देश को जन-संख्या से लाद रही है!', हमने बढ़ती आबादी पर एक लैक्चर झाड़ दिया।

बीवी ने हमें संदिग्ध दृष्टि से देखा; जैसे हममें किसी दिवंगत लीडर की प्रेतात्मा ने प्रवेश कर लिया हो। परन्तु, हमने घर पहुंचकर, बचाया हुआ सवा सौ रुपया अपनी जेब में डाला, और जख्मी सूअर की तरह, बाजार की ओर भागे।

शाम के साए झुकने का हम इन्तजार कर रहे थे, कि बिजली ही गुल हो गई सारे शहर की! हमने बिजली विभाग को (बिजली बुझाने पर) जीवन में प्रथम बार भरपूर दुआएं दीं, और हम अपनी खुफिया 'स्टैण्डर्ड वृद्धि स्कीम' को आखिरी शक्ल देने लगे।

अगले दिन 'पाउल्ट्री-फार्म' के भूखे मुर्गों की पहली बांग के साथ ही, हमारे पड़ोसी जागे, तो हमारे घर की ओर देखकर, जल—भुनकर कबाब हो गए। उनकी शक्लें देखने लायक थीं। ईश्वर—भजन के बजाए, वे हमारी यतामत की बातें करने लगे।

लार्ड कर्जन युगीन हमारे घर की खस्ता छत पर, एक गगन—चुंबी 'टेलीविजन—एण्टिना' (एरियल) आंखें मार रहा था। (रद्दी अखबारों से पटी फसूंदा) खिड़की के बाहर तक 'कूलर' का आधा भाग नजर आ रहा था। हमारे घर के रंग—उड़े द्वार पर, एक कुत्ता सात सुरों में मुहल्ले वालों को ललकार रहा था। उसी सुबह, पहली बार नहाने-धोने के बाद, उजले कपड़े पहिन, हम कचहरी की ओर चले, तो पडौसियों के लटके चेहरे नुमायश में रखने के काबिल बन चुके थे। हमारी दाहिनी बगल में, आसमानी रंग की एक चमकीली स्टील—'हेलमेट' थी, जो हमारे नए स्कूटर का एलान कर रही थी।

बीवी—बच्चों की 'निरंतर ट्रेनिंग' हमारी भरपूर गंभीरता और भूखे प्यासे (खूंखार) कुत्ते की 'वफादारी' के कारण हमारे 'स्टैण्डर्ड का राज' अभी तक नहीं खुल सका है।

कोई नहीं जानता, कि हमने पैंसठ रुपये का इकलौता 'टेलीविजन—एरियल लगवा रखा है! 'कूलर' के बजाय लोहे की एक पुरानी पेटी, टूटी खिड़की में धंसा दी है छेद करके। अवारा कुत्ता गेट पर रखा है—भूखा—प्यासा। और पचास रुपये की 'लोहे की टोपी' हम हर कहीं बगल में दाबे फिरते हैं; ताकि लोग यह समझें, कि स्कूटर हम पार्क करके चले आ रहे हैं।

★



मोटू पतलू
होली
कहानी एवं चित्रांकन: रघुबीर सिंह आर्टिस्ट
मोटू, पतलू और डा॰ झटका कमरे में बैठे बातें कर रहें हैं।
वाह! बब्बर शेर की औलाद, जानता नहीं होली के दिन हैं।
अभी यार तीन दिन हो गये। वो दोनों छछूंदर की औलाद घसीटा और चेला नही मिले।
जैसे हम चूहों की तरह बिना खाये-पिये रंगों के डर से घर में छुपे बैठे हैं। वैसे ही वो दोनों शेर कहीं छुपे बैठे होंगे।
भई अब मुझ से भूख बर्दाशत नही हो रही। पतलू कोई तरकीब सोच बाजार से कुछ खाने को लें आयें।
अरे तरकीब मैं बताता हूँ। हमारे घर में चूहे बहुत हैं। चलो उनका ही झटका करके खाते हैं। उसमें विटामिन बहुत होते हैं।
अबे रेगिस्तानी बिल्ले मेरा प्लान सुनो।
जल्दी बकवास कर। मेरे बोदी वाले लम्बे घिये।
?



अबे फरमा तो रहा हूँ। तुम्हें याद है एक बार रेल के सफर में हमारा ट्रंक किसी के ट्रंक से बदल गया था।
तो गच्चड़-गप्पे क्या मैं ट्रंक को खाऊँ। बड़ा प्लान सूझा है। बू हूहूहू...... !
अबे राजपूती मूँछ वाले उसमें किसी मुसलमान औरत के कपड़े थे।
तो फिर कपड़े ही खायें। वाह! क्या प्लान सूझा है पत्लू को।
अबे गधे पूरी बात तो सुन। मेरे कहने का मतलब है। उसमें से तीन बुर्के निकालते हैं। और वो बुर्के हम अपने ऊपर पहन लेते हैं।
अबे बैंगन, क्या इससे मेरी भूख मिट जायेगी। बू हूहूहू हू.........
नहीं, हम बुर्के पहन कर मुर्गा-बाजार जायेंगे। वहाँ जाकर कुछ खायें-पियेंगे।
वहाँ मीट वाला पुलाव खायेंगे और हमारे बुर्के देखकर हम पर कोई रंग भी नहीं डालेगा।
अमां यार, घर की खिड़कियाँ-दरवाजे तो बंद हैं। बाहर होली खेलने वालों का शोर हो रहा है। सावधान, कोई अंदर घुसकर रंग न डालदे।
वो तीनों एक तख्त पर बैठ जाते हैं।
ये होली का शोरगुल जरा आगे जाने दो। फिर हम मुर्गा-बाज़ार चलेंगे।
मैंने ऐसा इंतजाम किया है कि पानी की एक बूँद भी हमारे अंदर नहीं आ सकती।
तभी एक जोरदार गंदे पानी की मोटी धार तख्तपोश को ऊपर उठा देती है।
हाँ बेटा। पानी की एक बूंद तो नहीं लेकिन गंदे पानी का पिचकारा आ सकता है।
हम पर कीचड़ फेंकने वाला जरूर हमारा कोई बाप होगा।
अबे वाटर बाल, कीचड़ फेंक नहीं रहा कीचड़ पर उछाल रहा है।


वोतीनों बुर्के पहनकर पिछलीतरफ सेगली में आकर देखते हैं कि चिल्ली गंदे पानी के गटर में पाईप द्वारा मोटर से, उनके घर में पाईप घुसेड़ कर, उनके ऊपर पानी फेंक रहा है।
अमां ये तो चिल्ली है।
अरे चिल्ली- विल्ली को छोड़ो और मुर्गा-बाजार चलो।
एक बात का ध्यान रखना। वहाँ भीड़ बहुत होगी। कहीं हम एक-दूसरे से बिछड़ न जायें।
वो तीनों मुर्गा-बाज़ार चल पड़ते हैं।
अबे मोटू देखा हमारा आईडिया। कोई रंग भी नहीं डाल रहा और हम मजे से घूम रहे हैं।
अबे चलो पहले मीट-पुलाव खाते हैं।
अबे झटके और मोटू, तुम दुकानदार से बात मत करना। तुम्हारी आवाज भारी है। यदि पकड़े गये तो जूते पड़ेंगे। मैं बारीक जनाना आवाज में बात करूँगा।
पतलू दुकानदार के ऊपर रंग लगा हुआ देखता है तो कहता है -
मियां जी, आप मुसलमान होकर होली खेलते हैं।
महतरमा, हम भारतीय हैं। जब वो हमारी ईद मनाते हैं तो हम क्यों न उनके रंगों से खेलें। मुझे तो एक अर्सा हो गया है रंगों से खेलते हुये। हिंदु तो हमारे भाई हैं।


मियाँ जी, तीन-तीन प्लेट मीट पुलाव जनाना केबिन में भेज दो।
बहुत अच्छा महतरमा जी।
मोटू, पतलू और डा॰ झटका तीनों केबिन में आराम से मीट पुलाव खाते हैं। तभी पतलू चिल्ला पड़ता है।
अबे मोटे, तू मेरे मोटे-मोटे पीस उठाकर खा गया। मैं तेरे दाँत निकाल दूँगा।
अबे इतना ऊँचा क्यों बक रहे
किसी को पता चल गया तो
हमारा
झटका
कर दें
केबिन के बाहर दो व्यक्ति बैठे हुये उन की आवाज़ सुनकर चौंकते हैं।
आयं मौलाबख्श उर्फ घसीटे ये औरतें तो अपनी ही बिरादरी की नजर आती हैं।
अबे बिरादरी नहीं अपनी ही चाण्डाल-चौकड़ी लगती है।
तुम ठीक कह रहे हो। जैसे हम होली के डर से मुसलमान बने हुये हैं। ऐसे ही ये बुर्के के अंदर हमारे डरपोक शेर मोटू, पतलू और डा॰ झटका हैं।
यदि इन्हें जूते पड़े तो समझ लेना अपनी ही बिरादरी है। अगर बच गये तो कोई और हैं।
ये चुप तो बैठेंगे नहीं
बकवास जरूर करेंगे
और इनको जूते भी जरू
पड़ेंगे।
तभी केबिन के अंदर से आवाज़ आती है।
मियाँ जी, तीन जगह दस-दस प्लेट चावल और भेज दो।
मियाँ जी, हमें भी दो जगह दस-दस प्लेट चावल दे दो।
ये सुनकर घसीटा-
ये सुनकर मियाँ अपने नौकर से कहता है-
लल्ला अल्लाह का शुक्र है बड़े मोटे-मोटे आर्डर मिल रहे हैं। जल्दी-जल्दी प्लेटें दे दो।
जी अच्छा।



अबे ओ घसीटीये, इतने पैसे हम कहाँ से देंगे ?
अबे जैसे वो औरतें देंगी। वैसे हम भी दे देंगे।
अबे गधे ये बारीक आवाज किसी औरत की थी। ये हमारी बिरादरी नहीं ये सचमुच कोई औरतें ही हैं।
जनाना केबिन में डा॰ झटका मोटू से कहता है -
अबे मोटू की औलाद एक प्लेट तो छोड़ दे।
इस केबिन के अंदर झटके की आवाज लगती है। हमने धोखा नहीं खाया है।
ये प्लेटें छोड़ने का क्या राज है ?
हम भी दो-दो प्लेटें छोड़ देंगे। नहीं खायेंगे। देखें उनका क्या प्लान है।
इतनी देर में एक खातून जो की पतलू होता है। हाथ में प्लेट लेकर आता है और मियाँ के मुहँ पर जोर से मारता है फिर अपनी बारीक आवाज में कहता है -
आह !
अरे मियाँ तुम पर खुदा की मार। तेरे बच्चे मरें। तेरा बेड़ा गर्क हो। ये पुलाव दिया है कि कंकड़।


इतनी देर में हाथ में प्लेटें लेकर दो खातूनें और आती हैं। वो दोनों मोटू और झटका होते हैं। मियाँ के मुहँ पर प्लेटें मार कर कहते हैं।
ले मुये, अपने सर में डाल। इसमें कंकड़ ज्यादा और पुलाव कम है।
तभी चेला और घसीटा क्या देखते हैं कि एक खातून जो कि मोटू होता है। बारीक-बारीक कंकड़ उन दोनों की प्लेटों में डाल देता है।
फिक्र नाट खातून जी हम समझ गये।
शोरगुल सुनकर लोग वहाँ इकट्ठे हो जाते हैं।
अरे एक तो ये मेरी ग्यारह प्लेटें खा गई हैं और खाने के बाद कहती हैं इनमें कंकड़ है।
इतनी देर में पतलू सभी ग्राहकों की प्लेटों में कंकड़ डाल देता है और कहता है-
हम शरीफ औरतों की इज्जत आपके हाथ में है हमारा इंसाफ कीजिये।
सभी ग्राहक खुश होते हैं कि खातून हमसे बात कर रही हैं लेकिन बात करने के चक्कर मे पतलू अपना काम कर जाता है।
तभी घसीटा अपनी पुलाव की प्लेट मियाँ पर दे मारता
अबे ओ बकरदाढ़ी मियाँ, ये ठीक कह रही हैं। कंकड़ तो हमारी प्लेटों में भी हैं।
तभी चेला भी अपनी प्लेट मियाँ पर दे मारता है।
हाय! मर गया।
ये ले सारे कंकड़ ही कंकड़ हैं।
आखिर में मियाँ को इतनी प्लेटें पड़ती हैं कि मियाँ प्लेटों में ही दब जाता है।
या अल्लाह, आज ग्राहक होलसेल के पड़े
पिटाई भी होलसेल की हुई। मेरा गुनाह क्या
खुदा। ये तू ही जानता है कि मेरा गुनाह सि
इतना ही है कि मैंने दिल में कहा था इन
तीनों खातूनों में से एक खातून मुझे मि
जाये। क्या लाजवाब बारीक आवाज
उसकी। और तूने मुझे इतनी बड़ी
सजा दी कि मेरा और मेरे होटल
का कबाड़ बना दिया।


घसीटा पतलू के कंधे पर हाथ रखकर कहता है –
चलिये महतरमा, नहीं तो ये हमें घसीट कर बाहर निकाल देंगे।
मुए शर्म नहीं आती किसी खातून के कंधे पर हाथ रखते हुए। कहो तो जूते पड़वा दूँ।
भाभी चलिये, आप कितनी भी आवाज़ क्यों न बदलें हमने आप को पहचान लिया है।
वो बाजार में भीड़ के कारण एक दुसरे से अलग हो जाते हैं। तब मोटू एक मुस्लिम खातून का हाथ पकड़कर कहता है –
चल भाग चलें यहाँ से। अबे ये चूड़ियाँ अभी खरीदी हैं।
अरे ये बुर्के के अंदर किसी मर्द की आवाज़ लगती है।
इतना कहते ही वो मोटू का पर्दा हटा देती है। तो मोटू भागता है। ये सब देखकर वहाँ शोरगुल मच जाता है कि एक गुण्डा बुर्का पहन कर एक मुसलमान खातून को भगा रहा था।
वहाँ सभी लोग मोटू की पिटाई करते हैं।
पिटाई तो हमारी जन्म-कुंडली में लिखी हुई है बू हू हू हू हू ......
डा॰ झटका मोटू की हालत देखकर पास खड़ी खातून का हाथ पकड़कर कहता है –
चल पतलू भाग चलें नहीं तो हमें भी जूते पड़ेंगे।
एक गुण्डा और इसे भी मारो।
और डा॰ झटके की भी जूतों से पिटाई होती है।



मोटू और घसीटे की हालत देखकर......
अबे चल घसीटे, पतलू को बचाले। नहीं तो अभी उस बेचारे की भी पिटाई होगी।
हम उन जैसे पागल थोड़े ही हैं। पहले हम पर्दा उठाकर चैक करेंगे। पतलू हुआ तो भगायेंगे।
घसीटा यूँ ही एक खातून का पर्दा उठाता है। तो वो खातून दोनों को जोरदार चांटे रसीद करती है और घसीटे और चेले की दाढ़ी जमीन पर गिर पड़ती है। ये देखकर खातून चिल्ला पड़ती है।
दो गुण्डे और हैं मुस्लिम भेस में मुझे भगा रहे थे।
और फिर लोग चेले और घसीटे की पिटाई करते हैं। बाज़ार में इतनी पिटाई शुरू होती है कि भगदड़ मच जाती है और...
आह!
हाय!
ऐसे समय में एक मुसलमान आदमी जल्दी से पतलू का हाथ पकड़कर घसीटता हुआ कहता है -
बेगम, जल्दी चलो कोई बद-माश तुम्हें भगा कर न ले जाये। बेगम तुम्हारे सोने के कंगन कहाँ गये?
पतलू घबराहट में जनाना आवाज बोलनी भूल जाता है। और अपनी असली आवाज में ही बोलना शुरू कर देता है।
कंगन तो मैं पहनकर ही नहीं आया था।
मियाँ आश्चर्य से पतलू का पर्दा उठाकर देखता है और देखते ही चिल्ला पड़ता है -
एक गुण्डा और पकड़ा। मारो इसे।
और लोग पतलू की पिटाई भी तबीयत से करते हैं।
आह! मर गया।
बू हू हू हू हू......


इतनी देर में चिल्ली अपनी टोली के साथ होली खेलता हुआ वहाँ पहुँच जाता है और उन पाँचों के मुहँ रंग से काले कर देता है।
तभी वहाँ पुलिस आ जाती है
वो पाँचों गुण्डे कहाँ हैं?
यहाँ तो सभी के कपड़े, मुहँ रंगे हुये हैं और पहचानना मुश्किल है।
वो पाँचों भाग गये हैं।
वो पाँचों अपने घर आते हैं।
अबे मोटे कद्दू, जूते पड़ने से तो बेहतर था रंग ही पड़ जाता।
अमां यार शुक्र करो। चिल्ली ने हमें रंग दिया वर्ना हमें लोगों ने पहचान लेना था।
और हम होली की टोली के साथ-साथ घर तक आ गये।
बेटा अगर चिल्ली मुहँ न रंगता तो अब हम हवालात में होते और पुलिस के डबल-सोल के जूते पड़ रहे होते।
आगे से कसम खा लो हम डर कर नहीं प्यार से होली खेला करेंगे।
हम कसम खाते हैं। आगे से हम होली प्यार से खेलेंगे। और हम पाँचों की तरफ से पाठकजनों को होली मुबारक।
समाप्त

अनाड़ी भूत

'हाँ' किलाचन्द बोला और कुछ सोचने लगा, 'वह बहुत ही अजीब बातें थीं' 'वह बोला, मैं और वह दुबला अजीब सा भूत इस सुनसान कमरे में सुनसान क्लब में, इस छोटे से शहर के शुक्रवार के चुपचाप जीवन में सबकुछ बिलकुल सुनसान था सिवाय हमारी आवाजों के और एक बहुत धीमी आवाज के जो उसके झूलने से हो रही थी, कमरे में केवल एक मोमबत्ती जली हुई थी दूसरी ड्रेसिंग टेबल पर जल रही थी—कभी-कभी कोई लौ अचानक ऊंची उठ जाती थी और अजीब-अजीब घटनाएं हो रही थीं। 'मैं नहीं', वह बोला, 'मैं कभी भी नहीं—। और अचानक वह पलंग के पायतान रखी छोटी कुर्सी पर बैठ जोर जोर से सुबकने लगा। भगवान्! क्या भयानक कराहती चीज प्रतीत होता था वह।'

'तुम अपने को सम्भालो', मैं बोला और उसकी कमर थपथपाने की कोशिश की, और······मेरा आगे बढ़ा हाथ उसके भीतर से निकल गया। उस वक्त तक, तुम जानो मेरी हिम्मत भी तब से बहुत कम हो गयी थी जब मैं जीने में था और इसलिए मुझे भी स्थिति का पूरा अजबीपन महसूस हुआ। मुझे याद है कि मैंने अपना हाथ ज्यों का त्यों उससे बाहर खींच लिया, और थोड़ी हिम्मत कर मैं ड्रेसिंग टेबल के करीब गया 'तुम अपने को संभालो' 'मैं उससे बोला, 'और कोशिश करो' और उसकी हिम्मत बढ़ाने तथा सहायता करने के ख्याल से मैं भी उसी की तरह हाथों से कोशिश करने लगा।'

'क्या!' सतीश कुमार ने पूछा, 'क्या मुद्राएं?'

'हाँ, मुद्रायें।'

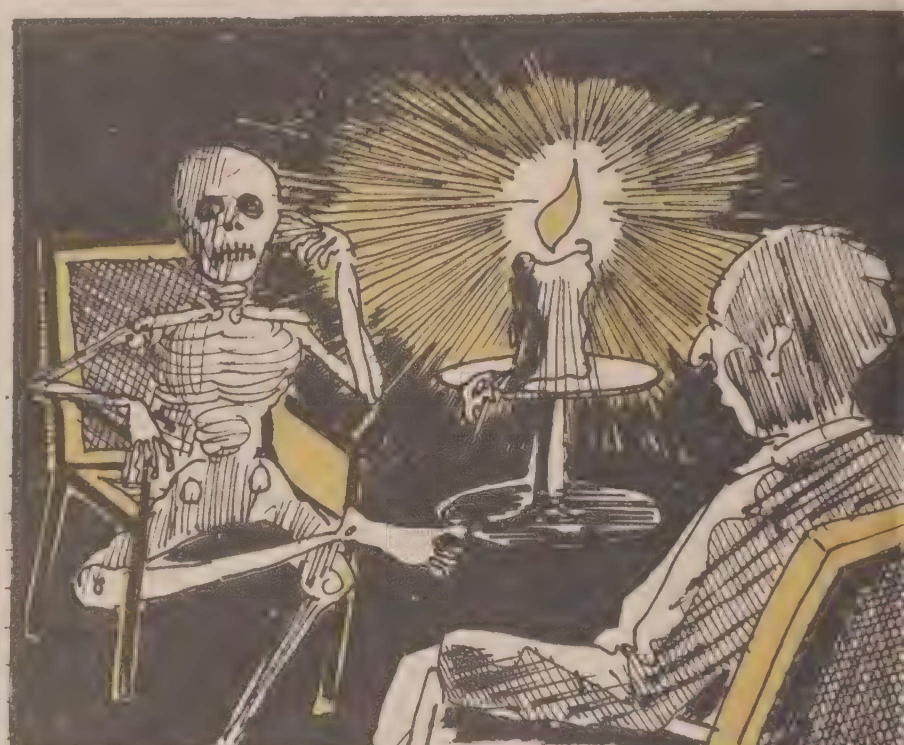
'परन्तु—' मैं काफी देर से एक ख्याल दिमाग में आने के कारण।

'यह तो बड़ी मजेदार बात है, 'अपनी उंगली पाइप के प्याले में घुसाते हुए सतीश कुमार बोला, तो तुम्हारा मतलब, तुम्हारे इस भूत ने तुम्हें अपना रहस्य बता दिया?'

'उसने रहस्य बताने का भरसक प्रयत्न किया था, हां।'

'नहीं रहस्य उसने नहीं बताया, या वह बता नहीं पाया' विश बोला 'अन्यथा तुम भी वहीं पहुंच जाते।'

'वही तो मैं भी कह रहा हूं' अपने विचारों को शब्द देता हुआ मैं बोला।



'वही तो बात है' किलाचन्द ने, अपनी गम्भीर निगाह आग की ओर कर कहा।

कुछ क्षण के लिए सन्नाटा रहा।

'और अन्त में सफल हो गया?' सतीश कुमार ने पूछा।

'अन्त में वह सफल हुआ, मुझे उसको बराबर प्रयास करने के लिए हिम्मत देनी पड़ी थी, परन्तु अन्त में सफल हुआ—कुछ अचानक! वह परेशान हो उठा, एक तमाशा सा हुआ और फिर उसने अचानक उठ मुझ से सब कुछ धीरे-धीरे दोहराने को कहा ताकि वह देख सके, उसने कहा 'मेरा विश्वास है, अगर मैं देख सकूंगा तो मुझे तुरन्त मालूम हो जाएगा, भूल कहाँ थी, और उसने वही किया।

'मुझे मालूम है' वह बोला, 'तु
क्या मालूम है?' मैंने पूछा।

'मुझे मालूम है' उसने दोहराया
यदि तुम मुझे देखते रहोगे तो मैं क
सही मुद्रायें नहीं कर पाऊंगा—सचमु
मैं नहीं कर पाऊंगा, सदा ऐसे ही हो
रहा है, मैं ऐसा अधीर व्यक्ति हूं कि तु
मुझे घबरा रहे हो' बस फिर कुछ
हम दोनों में बहस होती रही, जाहि
है मैं देखना चाहता था, पर वह खच्च
के समान जिद पर अड़ा हुआ था, स
ही मैं बुरी तरह थक चुका था, उस
मुझे थका दिया था, 'ठीक है' मैं बोल
'मैं तुम्हारी ओर नहीं देखूंगा' और
पलंग के करीब रखी अलमारी के शी
की ओर मुड़ गया।

'वह बहुत तेजी से शुरू हो गय
मैंने भी शीशे में देख उसका अनुसर
करने का प्रयास किया क्योंकि मैं जानन
चाहता था आखिर गड़बड़ क्या थी
उसकी बाहें और हाथ गोल घूम गए
ऐसे और ऐसे, और ऐसे और फिर बहु
ही तेजी से वह सबसे अन्तिम क्रिया प
पहुंच गया—तुम सीधे खड़े हो अपन
बांहें फैला लेते हो—और ऐसे ही व
खड़ा हुआ और फिर उसने आगे कु
नहीं किया, उसने कुछ नहीं किया! व
नहीं था! मैं शीशे से उसकी ओर घू
गया। वहां कुछ भी न था! मैं अकेला
था, चमकती मोमबत्तियों और थके हा

दिमाग के साथ। क्या हुआ था ? क्या कुछ हुआ ? क्या मैं सपना देख रहा था ? और फिर जैसे समाप्त की चेतावनी देने को जीने में लगी घड़ी ने पाया कि एक बजाने का समय हो गया है। तो ! टन ! और मैं एक जज के समान उदास और गम्भीर हो बठा था, मेरी सारी शेम्पेन और व्हिस्की का नशा काफूर हो चुका था। विचित्र सा महसूस करते हुए —हतबुद्धि सा विचित्र ओह भगवान् !'

उसने अपने सिगार की राख को देखा और बोला 'बस यही हुआ था।'

'और फिर तुम सो गए ?' महेन्द्र ने पूछा।

'और करने को था ही क्या ?'

'मैंने विश की आंखों में देखा, हम मजाक उड़ाना चाहते थे परन्तु शायद किलाचन्द की आवाज और तरीके में कुछ ऐसा था जिससे हम चुप रहे।

'और यह मुद्रायें ?' सतीश कुमार बोला।

'मेरा विश्वास है मैं अभी सब कर सकता हूं।'

'ओह !' सतीश कुमार बोला और पेन नाइफ ले अपने सिगार को साफ करने लगा।'

'तुम अभी करते क्यों नहीं' सतीश कुमार कट से चाकू बन्द करते हुए बोला।'

'मैं वहीं करने वाला हूं' किलाचन्द ने उत्तर दिया।

'यदि कुछ हो गया तो—' मैंने सुझाया।

'यदि तुम जानना चाहते हो, तो मैं कहूंगा, तुम क्रियायें न करो' विश ने टांगें फैलाते हुए कहा।'

'क्यों' ? महेन्द्र ने पूछा।'

'मेरे विचार से उसे नहीं करनी चाहिए' विश बोला।

'परन्तु उसकी क्रियाएं ठीक थोड़े ही थीं' सतीश कुमार पाइप में ढेर सा तम्बाकू ठूंसते हुए बोला।

'कुछ भी हो, मेरे विचार से उसे नहीं करनी चाहिए 'विश बोला हम विश से बहस करने लगे, उसने कहा कि किलाचन्द का उन मुद्राओं या क्रियाओं को करना एक गम्भीर बात का उड़ाना होगा।

परन्तु क्या तुम्हारा विश्वास है— ? 'मैं बोला। विश ने किलाचन्द को देखा जो बड़े ध्यान से आग को देख रहा था परन्तु कोई गम्भीर बात दिमाग में तोल रहा था।

'मुझे विश्वास है—आधी से ज्यादा बात का, मुझे विश्वास है।' विश बोला।

'किलाचन्द, 'मैं बोला, तुम कमाल का झूठ बोल लेते हो, और बातें तो खैर ठीक ही थी, पर वह गायब हो जाना 'बस उस पर तो जैसे विश्वास ही करना पड़ रहा है, तुम्हीं हमसे कह दो कि यह सारी बे सिर पैर की हैं।'

वह मेरी बात सुने बिना ही उठा और आग के करीब बिछे कालीन पर मेरी ओर मुंह कर खड़ा हो गया एक क्षण के लिए उसने अपने पैर देखे और फिर सारा समय उसकी निगाहें सामने की दीवार पर थीं। आंखों में गहराई झलक रही थी। उसने अपने दोनों हाथ धीरे-धीरे अपनी आंखों तक उठाए और फिर शुरु कर हो गया···

सतीश कुमार फ्रीमेशन लॉज का मेम्बर है जो अपने में गुप्त संसदी के भूत और भविष्य के रहस्यों का अध्ययन करती है, और वहां के मेम्बरों में सतीश कुमार कोई मामूली हस्ती नहीं है। उसनें किलाचन्द की क्रियाओं को बड़े एकाग्रही शाक से देखा।' बुरी शुरु-आत हैरान कर देने वाले नहीं हैं' वह बोला जब क्रिया समाप्त हो गई 'तुम वाकई जानते हो, कि बातों का मेल कैसे बैठाया जाता है, किलाचन्द परन्तु एक बारीक सी बात की कमी है, इसमें।'

'मुझे मालूम है' किलाचन्द ने कहा 'मेरे ख्याल से मैं तुम्हें यह भी बता सकता हूं, कौन सी बात है !'

'अच्छा ?'

'यह' और किलाचन्द ने अपने हाथों को आगे बढ़ा एक छोटी सी विचित्र सी मोड़-तोड़ की।

'हां'।

वह ही थी जो वो ठीक से नहीं कर पा रहा था किलाचन्द बोला, 'परन्तु तुम्हें कैसे ?'

'अधिकतर यह सारी बात, और खासकर कि तुमने यह सब घड़ी कैसे, मेरी समझ में नहीं आ रहा, 'सतीश कुमार बोला', परन्तु केवल वही भाग मैं जानता हूं 'वह बोला। यह क्रियाओं की



शृंखला गोपनीय संसद के एक भाग से सम्बन्धित है—शायद तुम जानते भी हो ! वरना और कैसे ?' वह आगे बोला, 'मेरे ख्याल से यदि मैं तुम्हें सही मोड़ बता दूं तो कोई नुकसान नहीं होगा; आखिर यदि तुम जानते हो तो जानते हो, नहीं जानते, तो नहीं जानते ।'

'मैं कुछ भी नहीं जानता, किलाचंद बोला, 'सिवाये उसके जो उस बदनसीब भूत ने कल रात बताया था ।'

'अच्छा जैसे भी हो', यह कह सतीशकुमार ने अपना गले में पहना हुआ क्रास उतार ध्यान से तख्ते पर रख दिया । और बड़ी तेजी से उसने अपने हाथों से क्रिया की ।

'ऐसे' किलाचन्द ने नकल करते हुए पूछा ।

'ऐसे' सतीश कुमार ने पाइप हाथ में लेते हुए कहा ।

'आह अब मैं पूरी शृंखला बिलकुल ठीक से कर सकता हूं' किलाचन्द बोला ।

वह चमकती हुई आग के सामने खड़ा हो हम सबको देखकर मुस्कुराया परन्तु मेरे ख्याल से उसकी मुस्कुराहट में कुछ हिचकिचाहट सी थी 'अगर मैं शुरु करूं—'वह बोला ।

'मैं शुरू नहीं करूंगा' विश बोला ।

'ठीक है ठीक है !' महेन्द्र बोला, तत्व नष्ट नहीं किया जा सकता, क्या तुम सोचते हो, कोई ऐसी उल्टी-पुल्टी क्रियाएं किलाचन्द को हमसे छीन कर छाया की दुनिया में ले जा सकती हैं । बिलकुल नहीं ! जहां तक मेरा सवाल है किलाचन्द जब तक तुम्हारी बाहें टूट कर गिर न जायें तुम उन्हें चाहे जैसे उल्ट-पुल्ट कर सकते हो ।'



'मैं उसका विश्वास नहीं करता' विश बोला,और उठकर उसने अपनी बांह किलाचन्द के कन्धे पर रख दी ।

'तुमने मुझे उस कहानी पर विश्वास करा दिया है, मैं क्रियाएं होते नहीं देखना चाहता ।'

'ओह राम !' मैं बोला 'विश तो बिलकुल डर ही गया है ।'

'हां, मैं डर गया हूं' विश वास्तविक या नकली घबराया सा बोला ।

'मेरा विश्वास है, यदि इसने यह क्रियाएं ठीक से कर लीं तो यह 'चला' जायेगा ।'

'ऐसा कुछ नहीं होने वाला', मैं बोला, मनुष्यों के लिए इस संसार से जाने का केवल एक ही तरीका है और 'किलाचन्द उससे अभी तीस वर्ष दूर है--साथ ही···और ऐसा भूत ! क्या तुम सोचते हो —?'

विश ने उठकर कुर्सियों के बीच से आगे बढ़ते हुए मुझे रोक दिया और किलाचन्द के पास जाकर कहने लगा 'किलाचन्द तुम मूर्ख हो ।'

किलाचन्द ने अपनी आंखों में मुस्कुराहट सी लिए उसकी ओर देखा और बोला 'विश ठीक कहता है और तुम सब गलत हो ।' मैं चला जाऊंगा । मैं इन क्रियाओं के अन्त में पहुंचूंगा, और आखिरी क्रिया करते ही, देखना ! यह कालीन खाली होगा, कमरा हैरानी से भर जाएगा और डेढ़ सौ पौंड वजन का एक सज्जन छायाओं की दुनिया में पहुंच जायेगा । मुझे पक्का विश्वास है, वैसे ही तुम्हें भी हो जायेगा । मैं आगे बहस करने से इन्कार करता हूं । ट्राई करके देख लेते हैं ।'

'नहीं' विश बोला और आगे बढ़कर रुक गया और किलाचन्द ने आत्मा के जाने के लिए दोबारा अपने हाथ ऊपर उठा लिए थे ।

तब तक हम सब भी तनाव में घिर गए थे—ज्यादातर विश के व्यहार की वजह से । हम सब किलाचन्द पर आंखें गड़ाए बैठे रहे—कम से कम मेरे भीतर तो सिर से पैर तक ऐसे लग रहा था मानो लोहा ठुक गया हो । और हमारे सामने एक अद्भुत और विचित्र प्रकार की गम्भीरता से किलाचन्द झुकता और घूमता रहा । अपने हाथों और बांहों को घुमाता रहा । जैसे-जैसे वह अन्त के करीब आता गया हम अधीर हो उठे, बेहद अधीर, दांत भींच कर देखते

बन्द करो बकवास



रहें' 'अंतिम क्रिया, मैंने बताया था बांहें बाहर को फैलाकर चेहरा ऊपर उठाकर करनी थी और जब वह इस क्रिया पर पहुंचा मेरी तो सांस भी रुक गई। तुम जानते ही हो यह बेकार बात थी, पर वह भूतों की कहानी का प्रभाव होता है न। और समय भी रात के भोजन के बाद इस विचित्र से पुराने घर में था। क्या वह—आखिरकार—?'

वह वहां एक लम्बे क्षण तक खड़ा रहा, अपनी बांहें फैलाए चेहरा ऊपर किये जिस पर लटकते हुए लैम्प की चमक पड़ रही थी। हमने उसे एक क्षण को एक युग के समान व्यतीत किया और फिर हम सबके मुंह से एक राहत की सांस निकली और फिर दुबारा विश्वास होते ही बोले' 'नहीं।'

'क्यों वह जाता हुआ दिखाई नही दे रहा था, यह सब कोरी बकवास थी, उसने एक बेसिर पैर की कहानी को ऐसे सुनाया था कि विश्वास सा होने लगा था, बस यही बात थी।···और तब उसी क्षण किलाचन्द का चेहरा बदल गया।

वह बदल गया। वह ऐसे बदल गया जैसे किसी इमारत की बत्तियां बुझ जाने पर वह बदल जाती हैं। उसकी आंखें अचानक एक जगह ठहर गई, मुस्कुराहट उसके होठों पर जम सी गई और वहां स्थिर रह गया। वह वहां बहुत ही धीरे-धीरे हिलता हुआ खड़ा था।

वह क्षण भी एक युग था और फिर अचानक कुर्सियां खिसकीं, चीजें इधर-उधर गिर गई क्योंकि हम सब एक साथ ही हिल उठे थे। उसके घुटनों ने जैसे सहारा देना बन्द कर दिया और वह आगे गिर पड़ा, महेन्द्र ने उठ उसे बांहों में पकड़ लिया। इससे हम सब भौचक्कों हो गए, मेरे ख्याल से एक मिनट तक किसी के मुंह से बात न निकली, हमें विश्वास हो गया था फिर भी विश्वास नहीं हो रहा था···मैं घबराहट के आलम से निकल उसके करीब झुका, उसकी कमीज और बनियान फाड़ कर सतीश कुमार का हाथ उसके हृदय पर पहुंच गया था।

'हां,—सामने दीख रहा साधारण सत्य जो हमारी सुविधा की प्रतीक्षा कर सकता था टिप्पणी की कोई जल्दी नहीं थी। वह एक घंटे तक वहां पड़ा रहा। वह आज भी मेरे मस्तिष्क की याद में उसी प्रकार मौजूद है, हैरान परेशान करता। किलाचन्द वाकई उस दुनिया में चला गया था जो हमारे इतने करीब और हमारी दुनिया से इतनी दूर है। और वह उसी राह से गया था जिससे नश्वर मनुष्य वहां जा सकता है। पर क्या वह वाकई उस बेचारे भूत के बताए तरीके से वहां गया था या फिर उस भूत की कहानी के बीच अचानक मिरगी का दौरा पड़ने से—जैसा कि डाक्टरों ने हमें विश्वास दिलाया है से—इसका फैसला मैं नहीं कर सकता। यह एक ऐसी पेचीदी पहेली है जिसका हल सारी बातों के अन्तिम हल निकलने तक मिलना कठिन है। जो मैं पक्की तौर पर जानता हूं, इसी क्षण, इसी समय, कि उन क्रियाओं को पूरा करते ही, वह बदला लड़खड़ाया और हमारे सामने गिरा—'मृत'!

हंसना मना है



एक छात्र ने कोशिश कर ड्राईव-इन थियेटर की ओपनिंग के कम्लीमेंटरी पास प्राप्त किये—तो उसने थियेटर फोन कर के पूछा एक टिकट में कितने लोग थियेटर में प्रवेश कर सकते हैं, तो उसे बताया गया एक टिकट एक वाहन के लिये प्रर्याप्त है।

उस शाम को एक दस टन की लॉरी जिसमें पिचानवें छात्र भरे थे थियेटर में प्रवेश करती देखी गई।

एक राहगीर ने एक नन्हें लड़के को फ्लेट के दरवाजे पर लगी घंटी बजाने की कोशिश करते देखा। मदद करने के लिये उसने लड़के को बगल में उठा, स्वयं घंटी बजा दी और प्रतिक्षा करने लगा। लड़का बुरी तरह उससे छुटने की कोशिश करने लगा तो उसने पूछा क्या परेशानी है?

'मिस्टर लड़का बोला, 'अब यहां से तेजी से भाग जाना चाहिये।'

डाक्टर एक मोटी तोंद वाले रोगी का मुआयना करके चुका। फिर उसने अपनी दराज में ढूंढ़ कर गोलियों की एक बोतल निकाली और उसे थमाई।

'कितनी बार दिन में लूं ये गोलियां डाक्टर साहब? रोगी ने पूछा।

'तुम्हें गोलियां खानी नहीं हैं डाक्टर ने उत्तर दिया। 'दिन में दो बार तुम इन्हें जमीन पर बखेर देना, और एक-एक करके खड़े होकर उठाना।'

सारी रात शराबखाने में बिताने के बाद जब एक शराबी सुबह-सुबह अपने घर की तरफ लुढ़कता पुढ़कता जा रहा था तो एक पुलिस मैंन उसे मिल गया।

'तुम इतने सुबह-सुबह कहां जा रहे हो? पुलिस मैंन ने पूछा।

'अपनी पत्नी का लेक्चर सुनने!' शराबी ने दुखी सा उत्तर दिया।

एक डाक्टर रोगियों के निरीक्षण में व्यस्त था कि बाहर से उसका रिसेप्शनिस्ट भागता हुआ भीतर आया और बोला बाहर एक ऐसा व्यक्ति प्रतीक्षा कर रहा है जो उनसे फौरन जीवन और मौत के बारे में मिलना चाहता।

'उसे फौरन भीतर भेज दो, डाक्टर बोला, व्यक्ति भीतर आया—और वह एक इन्शोरेंस एजेन्ट निकला।

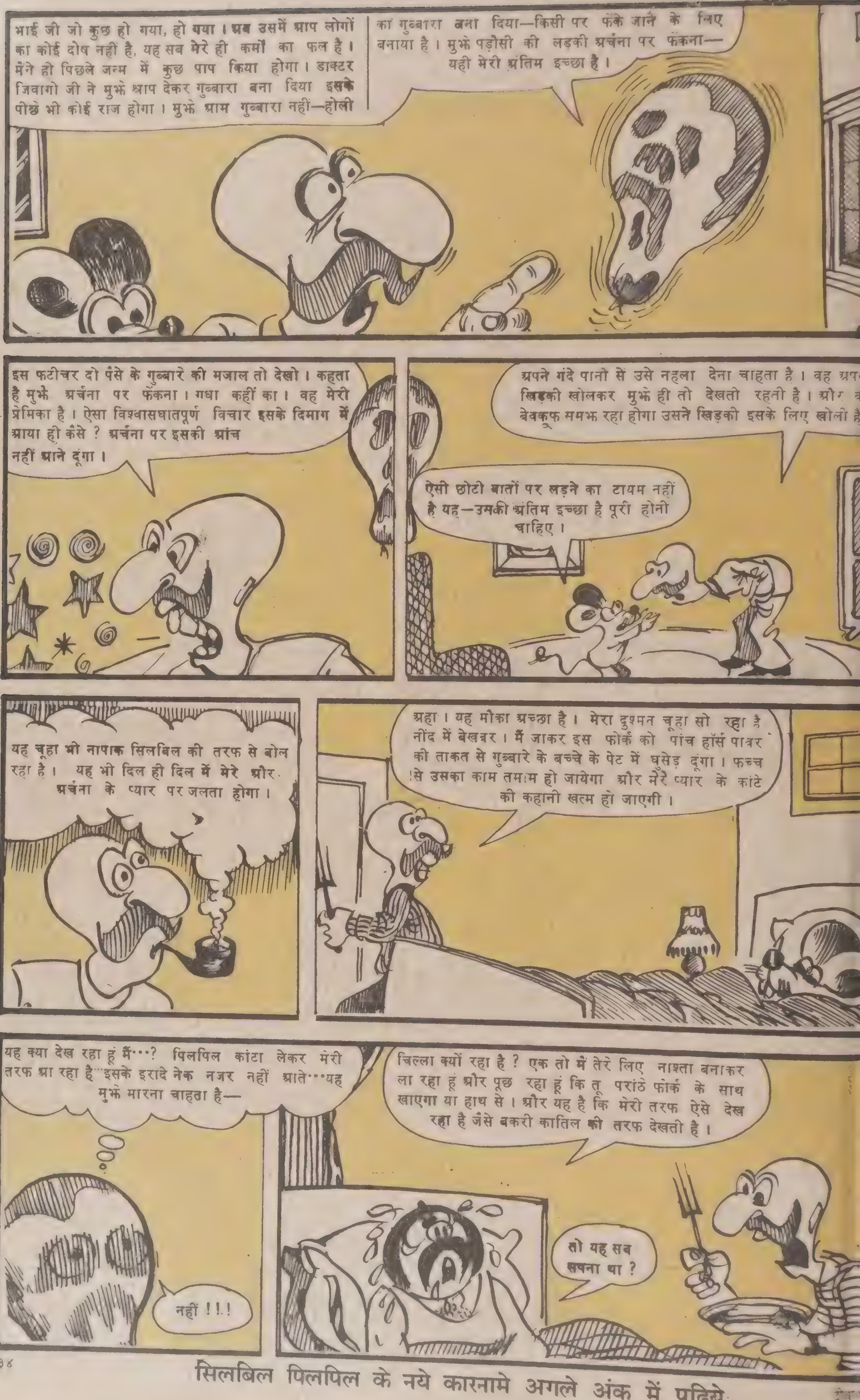
कोर्पोरेशन इन्सपैक्टर—'तुम्हें कब मालूम हुआ कि तुम्हारे मकान की छत चू रही है?'

किरायेदार—उस दिन रात को भोजन करते समय, जब मुझे अपना सूप पीने में लगभग तीन घंटे लगे थे।'



सिलबिल पिलपिल
डाक्टर का भूत ? भूत बनकर भी सेहत का ख्याल रखता है ?
सिलबिल वल्द गंगा राम गांव पचेड़ू, जिला गुड़गांव, सफना मरैना तहसील बंहलपुर तुमको सख्त हिदायत दी जाती है कि तुम ग्राइन्दा इस कमरे में बीडियां नहीं पियोगे…मैं डाक्टर जिवागो का भूत बोल रहा हूं…
डाक्टर जी थमको भूत बनने के बाद रहने के लिए मेरा ही कमरा मिला था—दिल्ली के किसी फाइव स्टार होटल में जगह नहीं मिली ?
मैं एक साल से इस कमरे में रह रहा हूं—ग्रौर तुमने बीड़ियां फूंक-फूंक कर मेरे फेफड़ों पर एक इंच मोटी निकोटीन की तह जमा दी है। इसके लिए तुम्हें सजा भुगतनी पड़ेगी। मैं तुम्हें श्राप दे रहा हूं—तुम इस होली के रोज खुद एक गुब्बारा बन जाग्रोगे तुम्हारी हालत वही होगी जो एक गुब्बारे की होती है। जैसे ही ग्रगले रोज मन में बीड़ी छोड़ने का संकल्प लोगे दोबारा सिलबिल बन जाग्रोगे।
क्या बात है नौ बज गए ग्रौर सिलबिल ग्रब तक ग्रपने कमरे से बाहर नहीं निकला। वैसे तो वह सात बजे ही ग्राकर चाय मांगने लग पड़ता था
ग्रब तक बाहर ही नहीं निकला ?
उसके कमरे से बीड़ी नं. २६ की सुगंध भी नहीं निकल रही है—गलती से ग्रांखें खोलना भूल तो नहीं गया ?
ग्रौर देखो ग्राज होली का दिन है। होली के रोज सुबह से ही हुड़दंग मचाने की उसने छः महीने पहले से ही पंचवर्षीय योजना बना रखी थी—उसे चलकर देखना चाहिए—कहीं रात को दिल का दौरा पड़ा हो ग्रौर रामप्यारी को प्यारा हो गया हो।
यह क्या है ? वह खुद गायब है ग्रौर उसके बिस्तरे पर इतना बड़ा किंग साइज गुब्बारा पड़ा है ? कहां से खरीद कर लाया होगा वह इतना बड़ा गुब्बारा ? कहीं बैलून क्लब वालों का बैलून चुरा कर तो नहीं लाया ?
इसका डिजाइन भी बड़ा ग्रजीब सा है दूर से देखने पर सिलबिल की सी शक्ल लगती है।


ाडियो मैं ही सिलबिल हूं ।
क्या बकता है ? आवाज इसी बैलून से आ रही है ? या बिस्तर के नीचे हमें बेवकूफ बनाने के लिए गुप्त ट्रांस मीटर छुपा कर रखा है ?
मैं सच कह रिया हूं, मैं ही थमारा भाई सिलबिल हूं । इस कमरे में डाक्टर जिवागो की आत्मा रहती है । उसने मुझे रात को बीड़ियां पीने के अपराध में श्राप देकर गुब्बारा बना दिया । आह सिलबिल तेरी यही कहानी—बाहर रबड़ और अन्दर पानी ।
ई साहब यह क्या हादसा हो गया बिचारे के साथ ? ाया था खुदा ने आदमी और बेचारा गुब्बारा बन कर ह गया । अब इसकी हम तारीफ भी नहीं कर सकते— रीफ करने का मतलब होगा फूक भरना और फूंक भरने पर यह पटाके की आवाज के साथ फट जायेगा ।
अब हम इसका क्या कर सकते हैं ? इसको कैसे अपने साथ रखेंगे ? पता नहीं कब बेचारा फट जाएगा ?
ब्बारा है तो क्या हुआ ? है तो आदमी की आत्मा । ादमी खुराक के बिना जिन्दा नहीं रह सकता । मैं इसे लूकोज का इंजेक्शन दे रहा हूं ।
नहींऽऽ ऐसा मत करना
सिलबिल ठीक ही कह रहा है इंजेक्शन की सुई जैसे ही अन्दर घुसेगी यह बेचारा फट नहीं जायेगा ? अन्दर कुछ डालने की बजाए जो कुछ माल अन्दर पड़ा है वह भी बाहर आ जाएगा ।
ब समस्या यह है कि घर में सके साथ गुजारा कैसे होगा ? रा सी असावधानी से यह फट जाएगा ।
इस गुब्बारे के फटने का मतलब होगा आदमी की हत्या—हम पर खून का मुकदमा चल सकता है । हमें जेल हो सकती है ।
मुझे यह तो पता था कि सिलबिल मुसीबत की जड़ है लेकिन कभी सोचा नहीं था कि इस तरह की मुसीबत बन जाएगा । क्यों न इसे बैंक में एक लॉकर किराये पर लेकर उसमें रखा जाए । सुरक्षित तो रहेगा ।



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

किंग्सटन में हार

कौन सी बीमारी लग गई है भारतीय क्रिकेट को

नवीन चन्द गोयल

भारतीय क्रिकेट टीम के ग्रह इन दिनों गर्दिश में लगते हैं। कुछ भी तो सही नहीं हो रहा। बैटिंग, बोलिंग, फील्डिंग कहीं भी तो भारतीय टीम का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं।

पाकिस्तान के हाथों 0—3 से शृंखला-पराजय का सारा आरोप वहां के अम्पायरों के गलत या एकतरफा निर्णयों के सर मढ़ कर भारतीय टीम भारी आलोचना से बच गयी थी वैसे भी अपने से बेहतर टीम के हाथों हारना किसी निराशा का कारण नहीं बना। पर वेस्ट इंडीज की उस टीम के हाथों हुई पराजय का कारण क्या बताया जाए जो अधिकांश खिलाड़ियों के बागी होकर दक्षिण-अफ्रीका चले जाने से अपनी वास्तविक शक्ति से आधी रह गयी थी।

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय क्रिकेट को कोई बीमारी लग गयी लगती है जिसका निदान निकट भविष्य में तो नहीं आता! 1977-78 में बेदी के नेतृत्व में पाकिस्तान से हारने के बाद गावस्कर के नेतृत्व में भारतीय टीम ने चार शक्तिशाली देशों—वेस्ट इंडीज, आस्ट्रेलिया पाकिस्तान व इंगलैंड को भारत में परास्त किया था पर पिछले वर्ष हम इंगलैंड से व पाकिस्तान से तो हारे ही, द्वितीय श्रेणी की श्रीलंका टीम से भी हारते-हारते बचे और अब किंग्सटन में वेस्ट इन्डीज से हार गए!

भारतीय टीम का प्रथम पारी का स्कोर—251 रन यदि उत्साह वर्धक नहीं था तो इतना बुरा भी नहीं था। विशेष तौर से यशपाल शर्मा (63) तथा उदीयमान आल-राउन्डर बलविंदर सिंह संधू (68 रन) का खेल प्रशंसनीय रहा।

जब वेस्ट इन्डीज की प्रथम पारी केवल तीन रन की बढ़त के साथ समाप्त हो गई तो भारतीय दृष्टिकोण से स्थिति आशामय थी।

आशा के पीछे मूल भावना यह थी कि इन्डीज को खेल के अन्तिम दिन बल्लेबाजी करनी होगी और तब तक खेल-पट्टी टूटकर (क्रिकेट की भाषा में यही कहा जाता है) भारतीय फिरकी गेंदबाजों की सहायक हो जाएगी जिसपर मनिन्दर, वेंकटराघवन, शास्त्री कहर बरपा कर भारतीय टीम को जिता सकते थे।

भारतीय क्रिकेट-प्रेमियों को यह भी खुशी थी कि चलो वेस्ट इन्डीज की टीम आल-आऊट तो हुई! पाकिस्तान में तो



दो या तीन विकेट गिरने के बाद बाकी खिलाड़ियों के आऊट होने का नम्बर ही नजर नहीं आता था।

भारतीय टीम के मैनेजर हनुमंत सिंह ने भी पहले दो दिन के खेल पर टिप्पणी करते हुए कहा कि पहले दिन भारत कठिन स्थितीसे उभर आया और दूसरे दिन उसका खेल शानदार रहा।

वेस्ट इन्डीज टीम के सचिव स्टीफन कमाचो ने भी भारतीय टीम द्वारा संघर्षपूर्ण प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए कहा—यहां (किंगस्टन/जमैका) के क्रिकेट-प्रेमी भारतीय टीम के प्रदर्शन से प्रभावित हो रहे हैं। मुझे विश्वास है कि सप्ताहांत में और अधिक दर्शक मैच देखने आयेंगे क्योंकि मैच बहुत रोचक स्थिति में है।

लेकिन जब दूसरी पारी की पहली ही गेंद पर गावस्कर क्लीन-बोल्ड होकर पवेलियन लौटने को मजबूर हुए तो भारतीय खेमे में निराशा के बादल छा गए। स्थानीय 'पब्लिक' में खुशी की लहर दौड़ गई। गावस्कर के आऊट होने की प्रसन्नता इसलिए भी ज्यादा थी कि इसी गावस्कर ने अपनी पुस्तक 'सनीडेज' में जमैका-वासियों को जंगली व असभ्य कहा था।

गावस्कर ने 1976 की घटना का जिक्र करते हुए लिखा कि यहां के निवासियों में खेल-भावना बिलकुल नहीं है। वे खिलाड़ियों का खून बहता देखना पसन्द करते हैं। वे अपने तेज गेंदबाजों को विपक्षी बल्लेबाजों के सिर फोड़ देने के लिए उत्साहित करते हैं।

गावस्कर के आऊट होने के बाद मोहिन्दर (40) तथा गायकवाड़ (23) द्वारा दूसरी विकेट के लिए 67 रन की साझेदारी से कुछ हिम्मत बंधी ही थी कि दोनों खिलाड़ी एक दूसरे के पीछे आऊट होकर पैवेलियन लौट आए।

एक बार फिर स्थिति डांवाडोल हुई पर चौथे दिन का खेल वर्षा के कारण न हो पाने के फलस्वरूप टेस्ट के अनिर्णित समाप्त होने की सम्भावना बढ़ गई। उल्लेखनीय है कि किंगस्टन और उसके आस-पास के क्षेत्रों में सूखा पड़ा हुआ था और पिछले दो वर्षों में यह पहली भारी वर्षा थी।

वर्षा के फलस्वरूप क्रिकेट मैच का रोमांच तो समाप्त हुआ ही, साथ ही वेस्ट इंडीज क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड को भारी आर्थिक नुकसान हुआ। सचिव के अनुमान के अनुसार चौथे दिन का खेल न होने से बोर्ड को 9,70,000 अमेरिकी डालर का नुकसान हुआ।

पांचवें दिन का खेल भी जब एक घंटा देर से आरंभ हुआ तो भारतीय टीम ने टेस्ट को निश्चित तौर पर अनिर्णित समझकर मात्र औपचारिकता स्वरूप खेलना आरंभ किया। हैरानी तो यह है कि प्रतिकूल परिस्थितयों में तो भारतीय बल्लेबाजी डावांडोल हो ही जाती है, अनुकूल परिस्थितियों में भी आक्रमणकारी कोई प्रशंसनीय खेल नहीं दिखा पाये।



चौथी विकेट 112 पर पांचवीं 118 पर, छटी 136 पर गिरी, तब भी संकट नजर नहीं आया। चायकाल के समय भारत का स्कोर छह विकेट के पतन पर 167 था और ड्रा निश्चित था।

चायकाल के बाद लीवार्ड आइलैंड के तेज गेंदबाज एन्डी रोबर्ट्स ने 20 गेंदों में केवल एक रन देकर चार बल्लेबाज आउट कर अपनी टीम के लिए विजयी-द्वार खोल दिए। इस टेस्ट में 100 रन पर नौ विकेट प्राप्त करने के परिणाम स्वरूप रोबर्ट्स को 'मैन आफ दी मैच' से विभूषित किया गया।

मेजबान टीम को विजय के लिए 90 मिनट के खेल में 172 रन बनाने की चुनौती मिली। किसी भी टीम के लिए यह एक कठिन कार्य होता पर भारत के कमजोर आक्रमण, शिथिल क्षेत्र-रक्षण व अनुभवहीन नेतृत्व के सामने नैसर्गिक प्रतिभा के खिलाड़ियों के लिए यह अपेक्षाकृत सरल सिद्ध हुआ।

सलामी बल्लेबाज हेयंस 21 गेंदों पर चटपट 34 रन बनाकर कपिल की गेंद पर क्लीन बोल्ड हो गया। मेजबान कप्तान क्लाइव लायड भी मेहमान कप्तान की गेंद पर मोहिन्दर द्वारा कैच-आउट कर दिया गया। पर विवियन रिचर्ड्स ने केवल 35 गेंदों पर 61 रन बनाकर विजयी-लक्ष्य को सरल बना दिया। लीवार्ड आइलैंड के गेंदबाज ने भ्रमणकारी बल्लेबाजी की कमर तोड दी और बल्लेबाज (रिचर्ड्स) ने आक्रमण को छिन्न-भिन्न कर दिया। दूसरी तरफ ग्रीनिज भी चौके कम छक्के अधिक लगा रहा था। दोनों के आऊट होते-होते भारतीय टीम के हाथ से खेल की पकड़ ढीली हो गयी थी। खेल के आखिरी ओवर की दूसरी गेंद पर स्थानीय खिलाड़ी ड्यूजन ने छक्का मारकर भारतीय टीम को चार विकेट से पराजित कर दिया।

ऐसी कठिन परिस्थिति में भारतीय टीम का कोई भी गेंदबाज कोई मेडन ओवर न फेंक सका जो भारतीय आक्रमण में धार (पैनापन) के कुंठित होने की तरफ तो इंगित करती ही है, वेस्ट इन्डीज खिलाड़ियों द्वारा तेजी से रन बटोरने की सक्षमता की ओर भी ध्यान आकर्षित करती है।

निश्चय ही, तेज गेंदबाजी व तेज बल्लेबाजी में कैरेबियन द्वीपसमूह के खिलाड़ियों का कोई जवाब नहीं। आगामी जून में तृतीय विश्वकप एक बार फिर वेस्ट इंडीज जीत जाय तो किसी को हैरानी नहीं होनी चाहिए।



गुलशन पामर 'प्रदीप' मुक्तसर (पंजाब) क्या आप बिल्ली के गले में घंटी बांधने की हिम्मत रखते हो ?

उ० : पैरों में घुंघरु बांधने की हिम्मत रखता हूं बशर्ते बिल्ली दो टांग वाली है ।

श्याम गागनानी, मुर्तिजापुर : शराब और शबाब में कितना नशा होता है ?

उ० : दोनों एक दूसरे के पूरक हैं जैसे व्हिस्की के साथ सोड़ा या सोड़े के साथ व्हिस्की ।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया, मग्डला, गरीब चंद जी शादी के समय दुल्हा खुश नजर क्यों आता है ?

उ० : क्योंकि उसे माल नम्बर एक और माल नम्बर दो, दोनों मिलते हैं ।

प्र० : गरीबचंद जी इन्सान शराब पीने के बाद क्या सोचता है ।

उ० : सोचेगा क्या ? सोचने की ताकत ही नहीं रहती ।

अजय कुमार शर्मा, छोटी बमनपुरी बरेली इस जमाने में क्या आदमी और जानवर में फर्क है ?

उ० : फर्क यही है कि जिन्दा रहने के लिए आदमी को राशन कार्ड बनवाना पड़ता है ।

शैलेश कुमार भाटिया, पोस्टल कालोनी, मलगांव, (महाराष्ट्र) : प्रेमिका अपने दिल का दर्द प्रेमी को ही बताती है; डाक्टर को क्यों नहीं ?



उ० : क्योंकि दिल के दर्द का इलाज ही प्रेमी को दर्द के बारे में बताता है ।

अशोक जौहर 'गगन' मोती बाजार, देहरादून : हमारे देश में जितने भी प्रमुख नेता हैं सभी बूढ़े हैं जवानों का समय कब आएगा ।

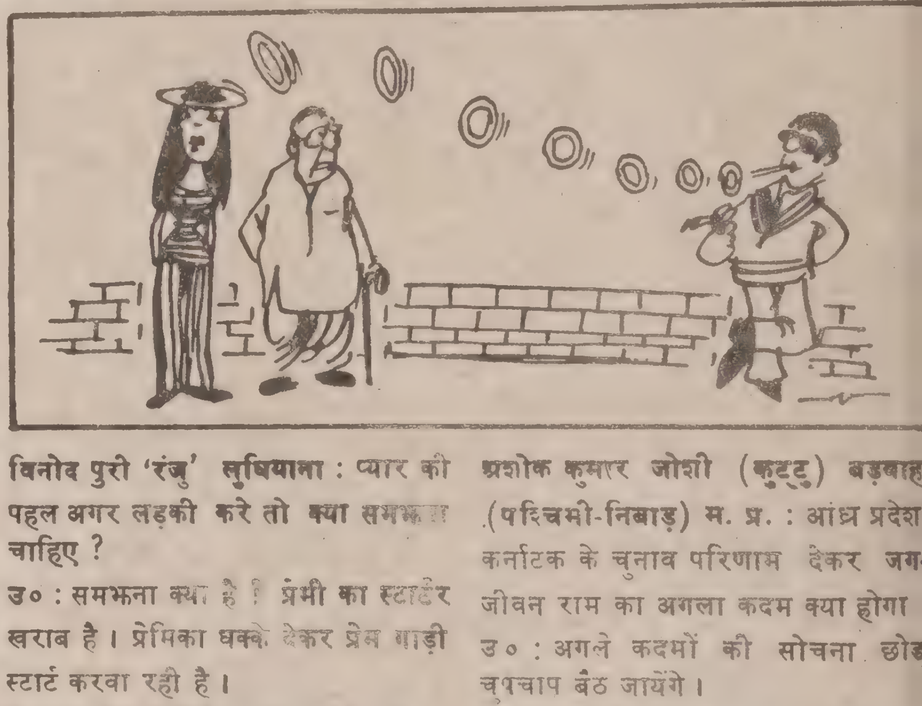
उ० : जवानों का समय भी आएगा जब वह बूढ़े हो जायेंगे ।

प्र० गरीब अंकल हमारे हाकी के खिलाड़ी अब ओलम्पिक में क्या खिताब हासिल करेंगे ?

उ० : हीरो से बन गए जीरो का खिताब ।

हरीश—दिनेश, हुसैनगंज : गरीबचंद जी लड़कियां आप को देखकर हंसती क्यों हैं ?

उ० : उन्हें अपने उन कपड़ों की याद आती है जिन्हें मैंने नाजुक जगहों से काटा था ।



विनोद पुरी 'रंजु' लुधियाना : प्यार की पहल अगर लड़की करे तो क्या समझना चाहिए ?

उ० : समझना क्या है ! प्रेमी का स्टार्टर खराब है । प्रेमिका धक्के देकर प्रेम गाड़ी स्टार्ट करवा रही है ।

मिस आशा शर्मा डिमापुर, चर्च रोड : मेरे पास रोज किसी न किसी लड़के का प्रेम-पत्र आता रहता है, बताइये मैं क्या करूं ?

उ० : एक फायल बनाकर उसमें फायल करते रहिए, डेट और सीरियल नम्बर डालते रहें । जब बुढ़ापा आयेगा तो उन्हें पढ़ने में बड़ा मजा आयेगा ।

योगेश कुमार अग्रवाल, डिमापुर :

एक सुन्दर सी है हसीना
उसका नाम है मिस शेलीना ।
मुझे देख, गाती है एक गाना,
'तेरा-मेरा प्यार वर्षों पुराना ।'
गरीब चन्द जी, इसका
जरा मुझको कारण बताना ॥

उ० : क्यों अलाप रहे हो दोनों मिल
राग पुराना
क्या हो खानदानी कबाड़िये औ[र]
दिल कबाड़खाना

प्रेम बाबू शर्मा 'सुमन' बगीची पीरजी मूर्ख अपने को ज्ञानी कब समझता है ?

उ० : हर समय सोचता है । ऐसा न हो तो वह मूर्ख ही नहीं है ।

गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली : गरीब चन्द जी लोग भगवान् को दुःख में याद करते हैं, तो प्रेमिका को कब ?

उ० : जब नींद नहीं आ रही हो तब ।

प्रताप कपूर, जवाहर नगर, रोहतक एक और एक ग्यारह होते हैं लेकिन दो और दो चार, ऐसा क्यों ?

उ० : बाईस भी होते हैं और दो और दो कंगाल भी बनाता है ।(यानि दो और दो यानि देते जाओ और देते जाओ) ।

अशोक कुमार जोशी (कुट्टू) बड़वाह (पश्चिमी-निमाड़) म. प्र. : आंध्र प्रदेश कर्नाटक के चुनाव परिणाम देखकर जग[जीवन] राम का अगला कदम क्या होगा

उ० : अगले कदमों की सोचना छोड़ चुपचाप बैठ जायेंगे ।

प्र० (चिल्ली के एक कान में बाली पहनने का राज क्या है ।

उ० : दूसरे कान में छेद है ही नहीं बाली कहां से पहनेगा । कान छेदने वाले ने एक ही कान छेदा और चिल्ली को देख हंसता-हंसता दूसरा कान छेदने से पहले ही मर गया ।

रवि भाटिया शंकर रोड : मैं सोचता कुछ हूं और करता कुछ हूं, ऐसा क्यों ?

उ : आपके दिमाग और हाथों का ताल-मेल बिगड़ गया लगता है ।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

रंगों की आवाज का जादू

विभिन्न व्यक्तियों द्वारा छोड़ी पिचकारी की धारों से निकलने वाली आवाज़ों का रंगदार परिचय



बीबी की पिचकारी पति पर
यहा भी धार खर्च्च मे पड़ेगी - खर्च की याद दिलायेगी।

लाइब्रेरियन की पिचकारी भी शऽऽऽऽ साइलेंस का इशारा करेगी।

दफ्तर के चमचे की पि ी की धार
चमचा दफ्तर में भी सर सर ा है उसकी होली की पिचकारा भी सर्र सर्र करते ागारी को प्रोत्साहन देगी।

आम मध्यवर्गीय की पिचकारी
मध्यम वर्गीय नागरिक हमेशा से पिसता रहा है और पिसता रहेगा। उसकी पिचकारी की धार भी पिस-पिस कर कह चिढ़ायेगी।

भारतीय हाकी प्लेयर की पिचकारी
पिचकारी से बौछार पिट की आवाज के साथ निकलेगी। हाकी में हमें पिटना है, पिटते रहो।

बूट पालिश वाले की पिचकारी या गुब्बारा शूऽऽ की आवाज के साथ जायेगा। यहा भी शु की हा याद आयेगी।

क्रिकेटर की पिचकारी से निकलने वाला रंग भी पिच की बात करेगा।

आशिक की पिचकारी
पिचकारी की धार डच टच की तमन्ना लिये निकलेगी। बौछार का अगला सिरा पंजे की आकार में जायेगा जैसे दबोचने जा रहा हो।

ताएक्वोन्डो

रोमांचक ताएक्वोन्डो पाठ का एक और भाग जो विख्यात जिमी जगतियानी द्वारा जिनके बहुत से मार्शल आर्टस के स्कूल देश भर में चल रहे हैं और जिन्हें मास्टर ब्रूस ली से इस आर्ट का कुछ भाग सीखने का सौभाग्य प्राप्त है।

एल. यीप्रोर्प चागी (सामने की ओर 45 डिग्री की लात मारना)

गाईरोगी मुद्रा में खड़े हो (नीचे की फोटो जैसे) टांग को आगे बढ़ाओ, घुटना मोड़ो जब तक वह कमर के करीब ऊंचा उठ जाये जैसाकि नीचे दिखाये गये अप-चा-पुसुगी में है: शरीर को थोड़ा-सा घुमाते हुए पंजे से साइड की ओर लात मारो। प्रहार के लिए पैर का तला प्रयोग में लाया जाता है। दस बार लात मारने के बाद दूसरी टांग का इस्तेमाल करो। कम से कम 50 बार इस प्रकार लात मारने का अभ्यास करो।







एम. हाडान माक्की
(निचले भाग के बीच का प्रहार)

(पाठ 1-A) की चोंग-बाई-सियोगी मुद्रा में खड़े हो दायीं टांग को चौंग-गुल सियोगी (पाठ 3) की भांति पीछे हटाओ। अपनी ओर आती हुई टांग के प्रहार को बायें हाथ से रोको और साथ-साथ दायें हाथ के घूंसे से प्रहार करो। यही क्रिया बायीं टांग और दायें हाथ से दोहराओ। क्रिया समझ लेने के पश्चात, पांच कदम आगे बढ़ पीछे मुड़ो, फिर पांच कदम बढ़ो और क्रिया का अभ्यास करो, जब तक कि तुम पूरी तौर से दोनों काम एक साथ आसानी से न कर लो। (Pic M, M I, M 2)

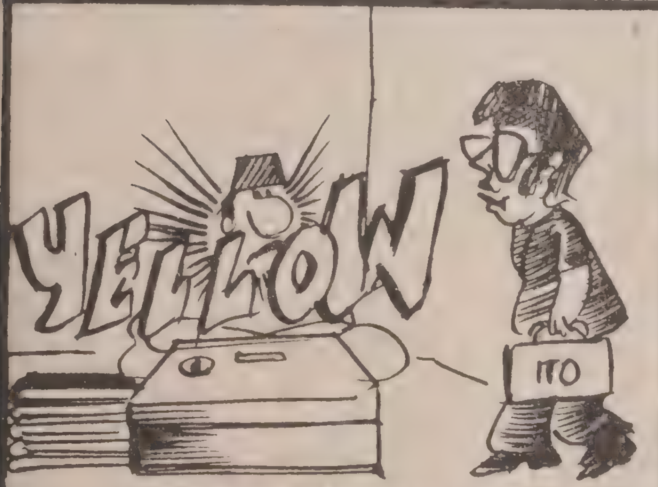






बैरंग दीवालियों के कुछ रूप

कुछ ऐसी स्थितियां जहां सचमुच रंग नहीं फैंका जाता लेकिन असर रंग फैंकने का ही पैदा होता है।



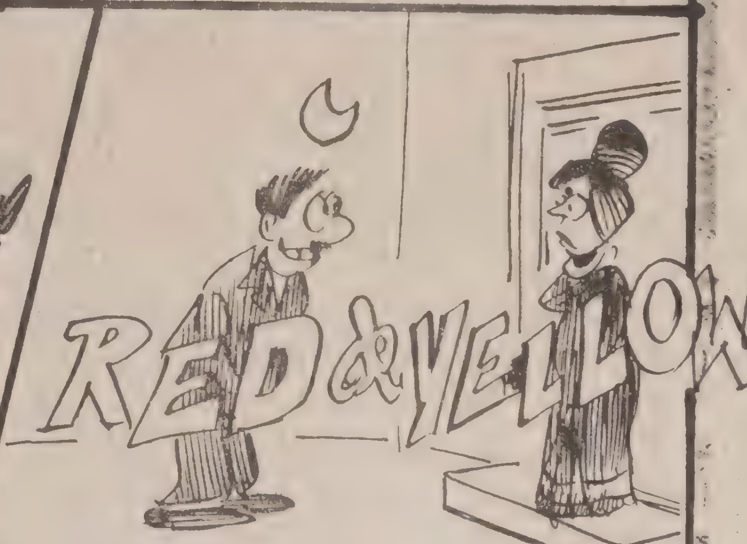
इनकम टैक्स आफिसर ने अचानक दर्शन दे कर व्यापारी के चेहरे का रंग पीला कर दिया।



बाबू राम लाल की लड़की ने नौकर के साथ भाग कर राम लाल जी का मुंह सफेद पड़वा दिया।



इन्होंने तरक्की का लैटर पाकर अपने साथियों के चेहरे का रंग जलन के मारे काला कर दिया.



देर से घर आकर पति ने पत्नी को लाल पीली होने का सुनहरा अवसर प्रदान किया।



ठेकेदार ने मुट्ठी गरम करने के लिये इंजीनियर के दफ्तर में तशरीफ लाकर इंजीनियर साहब का तन मन हरा कर दिया।



चाय और सिगरेट बनाने वाली कम्पनियां भी जनता पर कई प्रकार के [illegible] टोटके [illegible] है।



जालसाजों से सावधान !

जन सम्पर्क
उत्तर रेलवे



लल्लू
इस बार होली पर कुछ ऐसा हंगामा करना चाहिये कि सारे मुहल्ले में अपनी धाक जम जाये। खास कर लड़कियां मान जायें कि लल्लू भी कोई चीज है'''क्या किया जाये ?
लड़कियों में धाक जमाने का तो एक ही तरीका है, उन पर खूब गुब्बारे मारे जायें। होली से एक हफ्ते पहले से ही गुब्बारे मारना शुरू करूं'''गली से गुजरते समय सबकी नजर लल्लू की छत की तरफ उठे। क्यों कैसा रहेगा यह आइडिया ?
पिछले हफ्ते मैंने कोई काम नहीं किया, बस बाजार से गुब्बारों के पैकेट खरीद कर लाता रहा और उनमें पानी भर-भर कर छत पर उनका ढेर लगाता रहा। पानी भरे गुब्बारों का अम्बार लगा दिया—आठ नौ सौ गुब्बारों का स्टाक इकट्ठा हो गया। कल से लड़कियों पर गुब्बारे फेंकना शुरू कर दूंगा। कोई मेरे मकान के सामने से सूखा बचकर नहीं निकल पायेगा। सब मुझे मान जायेंगे। लल्लू होली के आने से पहले ही मुहल्ले का हीरो बन जाएगा। मेरे पास इतने गुब्बारे रेडीमेड हो गए जितने सारे मुहल्ले वालों के पास नहीं होंगे।
क्या सचमुच ही तुमने इतने गुब्बारे भर कर इकट्ठे कर रखे हैं या यूं ही डींग मार रहे हो ?
मैं सच कह रहा हूं। छत पर इकट्ठे कर रखे हैं। चलो मैं तुम्हें दिखाता हूं।
चलो देखें !
चलो।
मैंने तुम्हें दिखा दिया लेकिन औरों को न बताना।
रंग-बिरंगे गुब्बारों का यह अम्बार कितना प्यारा लगता है। यह तो बहुत अच्छी कलाकृति सी लगती है। तुमने इस एंगल से इसे देखा ही नहीं होगा।
लल्लू, मेरी बात मानो तुम'''इन गुब्बारों को लोगों पर फेंक कर इस कलाकृति को नष्ट नहीं करना। हो सकता है इससे तुम्हें वैसी ही ख्याति मिले जैसे चंडीगढ के रॉक गार्डन के बनाने वाले को मिली।
क्या मुझे चंडीगढ के नेक चन्द की तरह की ख्याति मिलेगी इस गुब्बारों के ढेर से ? हो सकता है नीना ठीक कह रही है। मुझे इसे नष्ट नहीं करना चाहिये'' मैं दिल्ली का गुब्बारों का कलाकार बन सकता हूं।
मैंने लल्लू के दिमाग में ऐसा फितूर भर दिया है कि अब वह गुब्बारे हम पर नहीं फेंकेगा, वर्ना गली से निकलना मुश्किल कर देता।
लल्लू, लल्लू ही रहेगा।

मूवी मसाला



कुली की काम पर वापसी—

मनमोहन देसाई के चेहरे पर खुशी की मुस्कान दौड़ रही थी। लगभग छः महीने बाद, मौत के करीब पहुंचा देने वाले बंगलौर विश्वविद्यालय बंगलौर में हुई उस दुर्घटना के बाद उस 'वीईपी' कुली काम पर लौट रहा था, देसाई फूलों और बैंड बाजे के साथ अपने हीरो की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे थे—'मैंने तो उसे लगभग नरक में पहुंचा दिया था, भगवान् का शुक्र है, वह हमें वापिस मिल गया,' देसाई बोले।

फूलों से जगह-जगह 'स्वागत कुली भगवान उसकी रक्षा करे लिखा गया था। नौसेना का बैंड अमिताभ की मन पसन्द धुनें बजाने के लिए तैयार खड़ा था। तीन कैमरे इस वाकये को भविष्य के लिये सुरक्षित रखने के लिए घूम रहे थे और मनों फूल सुपरस्टार की वापसी के स्वागत के लिए तैयार थे।

ऐसे स्वागत ने लम्बू पैसे बनाने वाले सुपरस्टार अमिताभ के मन को जीत लिया, जबकि 7 जनवरी को वो पूर्ण स्वस्थ दिखते हुए काम पर वापिस आए। जाहिर है उन्हें मौत से अपनी उतनी करीबी मुलाकात याद हो आई थी-'जीवित होना महान् है' वह बोले।

मनमोहन देसाई के लिए अमिताभ का इतनी भयंकर दुर्घटना के बाद वापिस आना अपने आप में एक मेजर ऐक्ट था उन्होंने इसका पूरा इन्तजाम किया, उनका बेबी फेस बेटा केतन चांदविलि स्टूडियो के दरवाजे पर शांती पर्वक कुली के लिए बड़ा सा हार लिए खड़ा था। और लगता था बैंड, हार, कैमरे देसाई साहब को संतुष्ट न कर पाये। उन्होंने इस बात का भी इन्तजाम कर रखा था कि अमिताभ जितनी देर भी सेट्स पर रहें उन पर फूल बरसते रहें। साथ ही देसाई साहब ने पूरा प्रेस कार्पोरेशन भी बुला रखा था' शूटिंग देखने और दोपहर का भोजन यूनिट के साथ करने के लिये, 'एक बहुत ही महत्वपूर्ण बदलाव केवल छः महीनों में !'

परन्तु अमिताभ देसाई से पहले ही पहुंच गये और स्वागत युनिट ने किया। वह चांदविलि स्टूडियो के सेट्स के बाहर ठीक नौ बजे पहुंच गए थे। परन्तु उन्हें चुपचाप मेकअप रूम में भेज दिया गया और वे लगभग दो घंटे बाद ही अपनी मैली लाल रंग की कुली की वर्दी में बाहर निकले। 'लाईसेन्स पोर्टर नम्बर 786 रेलवे'—

पुलिस के बड़े बन्दोबस्त के बावजूद बहुत से व्यक्ति गेट क्रेश कर भीतर घुस गए। सैकड़ों लोग बहुत ही शांतिपूर्वक खड़े अपने प्रिय अभिनेता को देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

पहले शाट में वही मनहूस मेज आनी थी, अमिताभ ने कहा, 'गद्दे लगाओ मैं फिर गिरुंगा' परन्तु देसाई साहब ने उन्हें आश्वासन दिया कि यह शाट हो चुका है और उन्हें उससे आगे का शाट देना है। देसाई अपनी बात पर दृढ़ थे साथ ही उन्होंने अमिताभ को उसके डाक्टरों की सलाह भी याद कराई। अमिताभ के चेहरे पर नकली गुस्सा था फिर वह हंस पड़े और देसाई की बात मान ली।

अगले ही क्षण वह अपने घुटनों पर थे चेहरे पर गुस्सा और दर्द झलक रहा था। और अमिताभ की वह तेज आवाज आई। चारों ओर तालियां बजी और दिन का पहला शाट कामयाब हुआ। कोई अमित के लिए बड़ा सा लड्डू लाया अमित ने आधा काटा और बाकी 'केतन' के मुंह में डाल दिया।

अगला शाट पुनीत इस्सार के साथ लड़ाई का था उन दोनों ने कुछ प्रेक्टिस किये घूंसे एक दूसरे को लगाये। कुछ और ऐसी ही लड़ाई के बाद सीन शाट हो गया। अपने स्टाईल के मुताबिक अमिताभ ने पुनीत को गले लगाया, देख कर पूरा विश्वास हो गया कि पुनीत का दुर्घटना या चोट का जिम्मा नहीं था। पुनीत सेट्स पर सबसे खुश व्यक्ति था 'मैं खुश हूं कि वह स्वस्थ है' वह बोला

शाट्स के बीचों बीच अमिताभ प्रेस वालों से भी बात-चीत करते रहे, अब उनके चेहरे पर कोई नाराजगी नहीं थी और न ही उनकी विशेष 'कोई फोटो नहीं, कोई रिपोर्ट नहीं थी।' उसके बजाय देखने में आये बहुत ही मजाकिया अच्छे और विनम्र अमिताभ और सभी बातों से अधिक पिछले महीनों में विशेष कर जब वे बीच कैनेडी हस्पताल में थे कि कवरेज ने उन पर अपना एक विशेष प्रभाव छोड़ दिया है। वास्तव में जब मनमोहन देसाई ने कैमरामैन को फोटो लेने को मना किया, तो अमिताभ बोले 'लेने दीजिए, जितनी चाहे लें' इन सब के बावजूद अमिताभ और प्रेस वाले कुछ देर चुप रहे। एक फ्रीलांस रिपोर्टर ने हिम्मत कर पूछा आप प्रेस को इन्टरव्यू नहीं देते थे अब कैसा लगता है ?'

'नहीं नहीं मैंने कभी इन्टरव्यू देने से इन्कार नहीं किया' अमिताभ बिना विचलित हुए बोले। किसी का भी मन उनकी बात पलटने को नहीं हुआ।

बहुत से प्रश्न उत्तर हुए, बहुत विनम्र उत्तर सामने आये, 'नहीं-नहीं राजनीति से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।' बच्चन ने उन सभी अनुमानों को एक ओर कर दिया जिन में कहा गया था कि वे दिल्ली जाकर रहेंगे, 'उनका कहना है मैं हमेशा हमेशा फिल्मों में रहूंगा।'

बीच-बीच में उनके शुभचिन्तक आकर उन्हें अपनी शुभ कामनायें दे जाते थे।

यदि 7 जनवरी की खुशियां और धन्यवाद देने से कोई अन्दाजा लगाया जा सकता है तो अमिताभ वास्तव में फिल्म जगत के ही हैं। लाखों के हृदय की पहली धड़कन।

इन्टरव्यू की चाह

—शिशिर विक्रांत

गपड़चंद जी की वर्षों की साध आज पूरी हो रही थी। सोने से बनी, चमचमाती हुई, स्वर्ग नगरी को वह, आंखें फाड़-फाड़ कर निहार रहे थे। बेश-कीमती जवाहरातों की चमक-दमक, उनकी आंखें बार-बार चौंधिया रही थीं। आंखें बंद न हों, इसके लिए उन्होंने दोनों हाथों से अपनी आंखों की पलकें चौड़ा रखी थीं। हाथ कुछ दर्द करने लगे तो उन्हें आइडिया सूझा।

कंधे पर लटकते झोले में से, धूप का चश्मा निकाल कर, उन्होंने आंखों पर चढ़ा लिया। बेहद राहत मिली। आंखें भी नहीं चुंधियां रही थीं। हाथ भी आजाद हो गए थे। और सब कुछ साफ-साफ दिखाई भी पड़ रहा था। धूप के चश्मे के आविष्कारक को खानदान धन्यवाद देते हुए, गपड़चंद जी होले-होले सोने से बनी सड़क पर आगे बढ़े।

असीम आश्चर्य और आनन्द की अनुभूति हो रही थी, उनको आज। अचरज इस बात का कि क्या सचमुच वह स्वर्ग नगरी में हैं? और आनन्द-प्रसन्नता इसकी कि बर्षों से सोचा हुआ सपना आज साकार हो रहा था।

हां, सपना ही तो था, गपड़चंद जी का। वर्षों पहले, जब से पत्रकार बने थे, एक ख्याल आया था। 'धरती लोक के किसी व्यक्ति का इंटरव्यू लिया तो क्या लिया? मजा तो तब है, जब स्वर्गलोक की किसी हस्ती का इंटरव्यू लिया जाए। मजा आ जाएगा जिंदगी का। जीवन साढ़े सोलह आने सफल हो जाएगा। रातों-रात नाम हो जाएगा, दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक।'

जानते वह भी थे कि यह सोचना सिर्फ ख्याली-पुलाव ही है, पर कभी-कभी अपने सपने में आशा की कुछ किरणें झलकती हुई उन्हें दिख जाती थीं। क्योंकि उन्होंने कईयों के बारे में सुना था, जिनको धरती पर रहते हुए ही ईश्वर के दर्शन हो गए थे।

गपड़चंद जी की सनक का यही आधार था। सोचा करते थे, बस एक दफा भगवान के दर्शन हो जायें। भगवान वर मांगने को कहेंगे तो छूटते ही वर मांग लेंगे—'प्रभु, बस एक बार स्वर्ग-लोक ले जाकर, वहां के अधिकारियों से मुलाकात करवा दो। जरा इंटरव्यू लेना है। दुनिया को स्वर्गपुरी की सच्चाई से आगाह करवाना है।'

अरसे से सोची हुई यह इच्छा पूरी होने पर, बेहद खुशी लाजिमी थी ही। पर मन ही मन घबरा भी रहे थे कि कोई पूछ-ताछ न कर कर बैठे। क्योंकि पास-पोर्ट या अनुमति-पत्र जैसी कोई चीज उनके पास थी नहीं।

गपड़चंद जी काले लेंसों का चश्मा चढ़ाए, नजारा लेते हुए, मन ही मन 'राम-राम' जपते हुए, अकेले ही चले जा रहे थे। इधर-उधर बने हुए जाने कितने ही महलों के सामने से वह गुजर चुके थे, पर चारों ओर छायी घनघोर शांति के कारण वह कहीं रुके नहीं थे। कहीं शोर-शराबा सुनते तो जाते भी, ऐसे में कहां जाते भला? वैसे भी महलों के आगे न तो कोई दिखा, जिससे पूछ-ताछ करते।

इसी उधेड़-बुन में गपड़चंद जी बढ़े जा रहे थे कि अचानक किसी से टक्कर लगी। चश्मा नीचे आ गया। सिर सहलाते हुए देखा सिर घूम गया। हाथ पांव कांपने लगे। दरअसल जिससे टकराये थे, वह लाल-लाल आंखों, बड़े-बड़े दांतों और लंबे सींगों वाला एक यमदूत था। उन्हें यह देखकर भारी अचरज हुआ कि उनसे ज्यादा वह यमदूत कांप रहा था। यमदूत से वह माफी मांगने ही वाले थे कि यमदूत मारे डर के हकलाते हुए कहने लगा, 'आप ही हैं न, जो पृथ्वीलोक से आये हैं, और जिसके डर से सब छुप गए हैं? मुझे अभी-अभी मालूम पड़ा तो मैं भी अपने महल के तहखाने में छुपने जा रहा हूं। देखिए, आपके पैर पड़ता हू, मेरा कोई नुकसान मत करियेगा।'

अब गपड़चंद जी को किसी के न दिखने का कारण समझ आया। गर्व से गुब्बारा बन गए, अपना रुतबा देखकर। पर बड़े भोलेपन से समझाते हुए बोले, 'अरे भैया, मुझसे डरने की क्या वजह? मैं तो जरा यहां के लोगों से मिलने-बतियाने चला आया। मैं किसी का नुकसान नहीं करूंगा। तुम्हारा भी नहीं। यहां के अफसरों से मिलवा दो तो बड़ा अहसान मानूंगा। उनसे थोड़ी बात-चीत करनी है।'

उनकी प्रेम भरी बोली से यमदूत को राहत मिली। बोला, 'हां-हां, क्यों नहीं? आप तो हमारे अतिथि हैं। आपके लिए तो सब कुछ हाजिर है। बताइये, किससे मिलना चाहते हैं? अफसरों से या अफसराओं से?' खी-खी—खी···दांत निपोरते हुए वह हंसा।

'देखिए, प्लीज मजाक मत करिये। मेरे पास वक्त बहुत कम है, और वर्क बहुत ज्यादा। देर से पहुंचूंगा तो पत्नी की फटकार पड़ेगी।' गपड़चंद जी व्यस्त-ता दिखाते बोले, 'ऐसा है, सबसे पहले आप यमराज जी से मिलवा दीजिए। उनसे साक्षात्कार करने की बचपन से चाह है। उनसे मिलकर कई बातें मैं जानना चाहता हूं।'

'ओफ, यमराज से···?' यमदूत लाचारगी से अपने सींग खुजाता हुआ बोला, 'उनसे मुलाकात करवाने में मैं असमर्थ हूं, क्योंकि मुझसे हुई एक खता की सजा के तौर पर, उन्होंने एक महीने के लिए मुझे अपनी कोर्ट से बाहर रहने का आर्डर दिया है। फिर भी आप मायूस न हों। किसी के जरिए में आपको उनकी कोर्ट के अंदर तक पहुंचवा दूंगा। चलिए, मेरे साथ···'

कहकर वह आगे-आगे चलने लगा और पीछे-पीछे चल दिए, झूमते-झूमते गपड़चंद जी।

सोचते हुए चल रहे थे कि क्या-क्या बातें करनी हैं? क्या-क्या प्रश्न पूछने हैं यमराज जी से? तभी कानों में पड़ी चीख-पुकार-चिल्लाहट से उनका ध्यान भंग हुआ। यमदूत से पूछने लगे घबरा कर, 'यह कैसी चीख-पुकार मच रही है महोदय जी?'

'बस-बस, सामने ही यमराज जी की अदालत है। वहीं हल्ला-हुल्लड़ मच रहा है।' यमदूत की बात सुनकर, गपड़चंद जी साहस बटोरने लगे। 'पता नहीं, कैसा होगा वहां का नजारा? यमराज जी इंटरव्यू देने को राजी होंगे भी या नहीं?'

'हां देखिये, यही है यमराज जी की अदालत।' आश्चर्य है, बाहर कोई गेट कीपर भी नहीं।'


फैण्टम- गुमनाम कमाण्डर
आओ ताला ग्लास बदलते हैं। एक प्राचीन पारिवारिक प्रथा (अभी आरम्भ की हुई) दोस्ती के लिए।
उउहू.....
नहीं.....
FALK & BARRY 1/14
मुझे अपने दूध में बादाम की हल्की सी गंध आ रही थी, मेरा दोस्त जहर पहचानने के लिए ट्रेन्ड है।
भौं भौं
© 1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
मेरे साथ चलो, नन्ही 'ताला
!
तुमने इस दूध में मेरे लिए क्या मिलाया था ?
मिलाया ? कुछ नहीं—दूध तो दूध है हा हा।
FALK & BARRY 1/15
© 1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
यदि मैं यह तुम्हारे मुंह पर फेंक दूं तो तुम्हारी आंखों में इससे क्या होगा ?
!
बारटेन्डर साहब आप मेरे साथ आइए। मुझे आपका ड्रिंक बनाना पसन्द नहीं आया।
!
FALK & BARRY 1/16
मैंने तुम्हारे बॉस को परदे के पीछे देखा था मुझे एक कान्फ्रेंस करनी है।
!!!
उह मैंने कुछ नहीं
कया...उह मेरा दम
ुट रहा है।
तुम्हारे बॉस का क्या नाम है?
मि० वौंग।
मि० वौंग, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ
क्या बात है ? अन्दर आ जाइए,
FALK & BARRY 1/17
© 1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved


मुझसे मिलना चाहते हो, तुम रुके क्यों हो, श्रन्दर श्रा जाश्रो, मैं व्यस्त व्यक्ति हूं !
FALK & BARRY 1/19
डेविल की चेतावनी गुर्राहट ।
श्राप श्रौर भी व्यस्त हो जायेंगे ।
!
©1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
ब्लू ड्रेगन सैलून में ।
!
FALK & BARRY 1/20
©1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
फैन्टम बिजली की चमक से भी तेजी से बढ़ता है, जंगल की प्राचीन कहावत !
!
!
!
वाश्रो !
उहह
गर्रर...
फैन्टम उन्हें हड्डी तोड़ पकड़ में जकड़ लेता है !
डेविल, फैन्टम का बढ़िया पहाड़ी चीता, बन्दूक वाले श्रादमी को पकड़ लेने के लिए सिखाया हुश्रा ।
उहह !
FALK & BARRY 1/21
©1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
"ब्लू ड्रेगन में" "बदमाश" ढ़श्म !
!!
FALK & BARRY 1/22
©1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
मि० वौंग, क्या श्रब हम श्रपनी छोटी सी बातें कर सकते हैं ?
!
उह ह ह